तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

वर्ष : २७ अंक : १० जनवरी : २००४

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २७ अंक - १०, जनवरी, २००४

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये

पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@vsnl.net

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	अपकाय जीव की वैज्ञानिक परिकल्पना	– डॉ. जीवराज जैन	५५१
२.	जैन दर्शन में अंडा और माँस भक्षण	– डॉ. जीवराज जैन	५५६
३.	श्रीचन्दराज चरित्र		५६५

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

अपकाय जीव की वैज्ञानिक परिकल्पना

—डॉ. जीवराज जैन

जैन आगम में :

१. जैन आगम में विकास-क्रमानुसार ५ प्रकार के जीव बताये गये है। इस क्रम के सबसे निचले सौपान पर एक इन्द्रिय वाले जीव हैं। उससे ज्यादा विकसित दो-इन्द्रिय, फिर तीन इन्द्रिय, चौरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव हैं। मनुष्य ५ इन्द्रियों वाला विकास-क्रम के सौपान पर सबसे ऊपर है।

एक इन्द्रिय वाले ५ प्रकार के जीव हैं। यथा पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय। ये सभी स्थावर जीव है। उनमें बनस्पतिकाय ही केवल जैव-कोषाणु आधारित जीव है, जिसको आजका विज्ञान भी सजीव होना मानता है। लेकिन अन्य जीवों के प्रकार को तो विज्ञान केवल रासायनिक पदार्थ के रूप में ही मानता है। यथा पृथ्वीकाय को ठोस पदार्थ, अप्काय को तरल पदार्थ, वायुकाय को गैस पदार्थ और तेऊकाय को प्लाज्मा पर्याय रूप पदार्थ मानता है। ये स्वयं जीव तत्व है, ऐसी विज्ञान सम्मत कोई धारणा नहीं है। ये रासायनिक या भौतिक क्रियाओं द्वारा पैदा किये जा सकने वाले पदार्थ मात्र है।

पानी एक ऐसा तरल द्रव्य है, जिसमें कुछ विशेष परिस्थितियों में बी. ओ. डी. (Biological Oxygen Demand) देखी गई है। यह एक संभावना हो सकती है कि ऐसे बायोलोजिकली सक्रिय पानी को सचित्त-पानी की श्रेणी में रख सकें। लेकिन यह शायद पानी में अवस्थित माइक्रो-प्लाजमा या बेक्टेरिया जीवाणु से संबंधित है। तब तो यह पानी जीव से परे, बाह्य जीव है। हर विज्ञान के छात्र के मन में यह सीधा प्रश्न उठता है कि वो कैसा 'जीव' हो सकता है जिसकी पानी ही काया है। साधारणतय यह अब तक के 'जीव' की कल्पना के परे की वस्तु लगती है।

हमने विज्ञान में अब तक ऑर्गेनिक कोषाणु आधारित जीव-पदार्थ को जाना है-समझा है। हम एक नये क्षेत्र में इनऑर्गेनिक (inorganic) कोषाणु आधारित जीव-पदार्थ की सम्भावना की तरफ चलते हैं। यह गवेषणा/

खोज करेंगे कि आगम-वर्णित बनस्पतिकायिक जीवों के अलावा एकेन्द्रिय जीव किस तरह जीव धारण करते है, किस तरह सचित्त बन सकते हैं।

२. जीवित-पानी की वैज्ञानिक अवधारणा (concept)

विज्ञान ने अभी तक जैव-कोषाणु आधारित जीव को ही मान्यता दी है। फिर भी जीवन की दूसरी सम्भावना या परिकल्पना कोषाणु के रूप में हो सकती है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर जगदीश चंद्र बोस ने तो वनस्पति के साथ साथ पत्थर आदि को भी जीव रूप में कल्पित किया था। उन्होंने बनस्पति में जीव के लक्षण होना तो साबित कर दिया था। विज्ञान केवल यह जानता है कि पानी को रासायनिक क्रियाओं द्वारा पैदा किया जा सकता है। हाइड्रोजन व ऑक्सीजन गैस के संयोग से निम्न प्रकार यह द्रव्य बनाया जा सकता है :

$H_2 + O = H_2O$

३. पानी की संरचना :

यह सिद्ध हो चुका है कि पानी के द्विध्रुवात्मक अणु हाइड्रोजन-बोन्ड की उर्जा से एक विशिष्ट षष्टी के आकार की बनावट बनाते है, जो $H_{12} + O_6$ फॉर्मूले से दर्शाया जा सकता है। साधारण हाइड्रोजन बॉन्ड कमजोर होता है। लेकिन धुली हुई हवा के आयन की मौजूदगी के कारण, जब पानी का षष्टी व पंचमुजी रवा जुड़कर तीन आयामी ढॉचा बनाते हैं, तो वे कमरे के तापक्रम पर भी स्थायी रहते हैं। यह इकाई रूप आकार, अपनी केन्द्रिय-उर्जा से, सहजातिक अणुओं (Homeo) को आकर्षित करके, १८ इकाइयों का एक जाली-रूप, बंद ट्यूब जैसा कोषाणु बनाता है। अन्दर से खोखला होने के कारण, पानी में धुली हुई स्वतंत्र ऑक्सीजन के अणु या रेडिकल, इस पाइपनुमा ढाँचे में, प्रवेश करते हैं तथा बाहर निकलते हैं। यह जाली-रूप ट्यूब की आकृति एक सीधी ट्यूब या मुड़ी हुई ट्यूब या फिर शंकु, मंडलाकार या गोलाकार ट्यूब के रूप में हो सकती है। इसकी सतही उर्जा अल्पत्तम होती है। उबालने पर यह ढाँचा टूट जाता है।

सहजातीय अणुओं (Iso-mol) से बना यह कोषाणु खोखले मधुमक्खी के छत्ते की तरह दिखाई देता है। स्विस केमिस्ट लुइस रेय, फ्रेंच वैज्ञानिक जेक्स बेन्वेनिस्टे तथा कोरियाई टीम (कुर्ट गोक्लर आदि ने सन् २००१ में) 'पानी की याददाश्ती' पर खोज करके इसकी प्रमाणिकता को प्रतिपादित किया है। यह कोषाणु अपनी विधुत उर्जा से समाविष्ट रहता हैं। यह ऊर्जा, अंदर

जाते और बाहर आते, धुली हुई हवा के अणुओं को सक्रिय संतुलन (dynamic balance) में रखती है। अपनी संचित ऊर्जा को, मांग होने पर यह कोषाणु उपलब्ध कराने में भी समर्थ होता है।

४. जीव-अजीव का विवेचन :

आधुनिक विज्ञान ने जीव की परिभाषा इस प्रकार की है :

(१) जिसमें ऊर्जा का आदान-प्रदान हो सके, यानी उर्जा को आबद्ध (fix) करके निर्दिष्ट दिशा में अंतरण/तबादला (transfer) कर सकें।

(२) जिसमें स्मरण रखने की तथा सूचना प्रसारण की क्षमता हो

a) उपरोक्त भौतिक कोषाणु की संरचना में ऊर्जा का आदान-प्रदान होना तो सम्भव है। यहां तक कि उसके खोखले आकाश (space) में सक्रिय-संतुलन में रह रहे वायु के अणुओं से तो ऐसा दिखता है कि कोई श्वासोच्छवास जैसी क्रिया संपन्न हो रही हो।

b) लेकिन यह कोषाणु स्मृति रखने की क्षमता रखता है, यह कैसे मालूम हो?

५. दवा बनाना :

इसके लिये हम होमियोपेथी की पानी (aqua) आधारित दवा के आधुनिक सिद्धान्त का अध्ययन और विश्लेषण करते हैं। होम्यो, में पोटेन्सी (अन्तःशक्ति) बनाते वक्त अर्क का १:१०० अनुपान में क्रमबद्ध विरलीकरण किया जाता है। विरलीकरण की एक क्रिया में अर्क मिले द्रव्य को यांत्रिक तरीके से १० बार जोरदार हिलाया (stir) जाता है। इससे १ पोटेन्सी की दवा बनती है। इसी से फिर आनुक्रमिक विरलीकरण करके आगे की पोटेन्सी तैयार की जाती है।

इस यांत्रिक हिलाने की क्रिया में 'extract' (अर्क) का ऊपर दर्शायें पानी के कोषाणु पर (Iso-mol cell) पद-चिन्ह लगाये जाते हैं, यानि अर्क के आयन कोषाणु की ट्यूब-काया पर अपनी छाप छोड़ देते हैं। यह नम-बालू के ढेर पर चलते ट्रक के टायर की सतही बनावट की छवि अंकित करने के माफिक क्रिया है। इस क्रिया द्वारा वह कोषाणु 'संस्कारित' हो जाता है। बार बार टायर के आगे-पीछे होने से जैसे वो 'छाप' और गहरी होती जाती है, उसी प्रकार जितनी ज्यादा अंतः शक्ति बढ़ाते हैं, यह संस्कार, कोषाणु दीवार व आकृति पर उतना ही गहरा होता चला जाता है।

६. असर करने की प्रकिया :

जब यह संस्कारित-कोषाणु व्यक्ति के खून के साथ दौरा करते हुए शरीर के कोषाणुओं द्वारा सोख लिया जाता है, तब वह इन कोषाणुओं की बनावट को प्रभावित करना शुरू कर देता है, बजाय उसको उसकी वृद्धि में मदद करने के। जब यह संस्कारित पानी का कोषाणु हमारे शरीर के कोषाणु की झिल्ली के सूक्ष्म छिद्रों के अंदर और बाहर आता है, तो विधुत-आवेश (पल्स) पैदा करता है, जो न्यूरोन व दूसरे कोषाणुओं द्वारा संचार-प्रसारण के उपयोग में आता है। ये छिद्र या चैनल भी बड़ी विशिष्ट होती हैं (specific) और कंट्रोल रखती हैं कि क्या अंदर जा सकता है और क्या नहीं। यह कोषाणु के जीन्स (genes) और डी. एन. ए. (DNA) को याद दिलाने में या नई स्मृति बनाने के लिये 'उत्प्रेरक' की तरह काम करता है। इसकी मौजूदगी में जीन्स की संकेत नियमावली और निर्देश (Genetic code modification) में बदलाव होना मुमकिन हो सकता है। इसके द्वारा (i) या तो उसी प्रकार के नये कोषाणुओं के निर्माण के लिए उत्तेजित किया जाता (ii) या रोग-प्रतिकाराक (antibody) कोषाणु के संश्लेषण के लिये निर्माण की गति तेज की जाती है।

ये दोनों प्रकार के निर्देश उस संस्कारित कोषाणु की आकृति और ऊर्जा पर निर्भर करते हैं। तथा जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, यह संस्कार उस दवा में डाले गये सूक्ष्म-मात्रिक तत्व द्वारा उस कोषाणु पर किये गये लेप व अंकन की गहराई पर निर्भर करता है। इस प्रकार पानी के इस भौतिक कोषाणु में स्मृति और सूचना-प्रसारण जैसी क्रिया होती दिखाई देती है। जो किसी संरचना के जीवित होने का प्रमुख लक्षण है।

७. सारांश– होम्योपेथी में पोटेन्सी या पतलापन बढ़ाने से जीवित-पानी (अप्काय) के कोषाणु की उत्प्रेरण या कार्य क्षमता बढ़ जाती है जीन की स्मृति और नियमावली (code) को सक्रिय करने के लिये। जिससे मूल जीवन में (a) रोग-प्रतिकारक कोषाणु पैदा करने की तथा (b) सजातीय जैविक उत्पाद को संश्लेषित करने की क्षमता बढ़ जाती है।

२. मुक्त रूप से घूमते मूलक (radicals) या निऑक्सीकारक (deoxidants) या विशिष्ट कोषाणु (characterised cell) की तरह ही जीवित पानी के कोषाणु भी एक विशिष्ट प्रकार के पद-अंकन धारण कर,

उस कोषाणु में उत्प्रेरण का काम करते हैं, जिसकी नाभि में जाकर वे वहां के जीन से संबंध स्थापित करते है।

३. इस प्रकार जीवन की दोनों शर्तों को पूरी करता हुआ पानी भी वैज्ञानिक दृष्टि से अप्काय का सचित पदार्थ हो सकता है, जैसा कि हमारे अतीत के ऋषियों ने, मुनियों ने बताया था।

यह होम्योपैथी की तरह एक प्रभाव-आधारित परिकल्पना (hypothesis) है। इससे आपकी कल्पना शक्ति यदि उत्तेजित व उद्वेलित होती है तो इसकी प्रयोगों द्वारा जीवित-कोषाणु को समझने व उसमें झांकने की मूल-शोध व जांच-पड़ताल करने में शीघ्र लग सकते हैं। मानव-जाति के लिये इसमें छिपी प्रबल संभावनाओं के मद्दे नजर, वैज्ञानिकों के सघन प्रयासों का आह्वान किया जाता है।

८. उपसंहार—सचित्त अप्काय सामूहिक याद-दाश्ती (memory) का वाहक बनता है, तथा उस सामूहिक मेमॉरी का प्रभाव भी होम्योपेथी पद्धति में प्रयोगों से सिद्ध होता आ रहा है। लेकिन यह मेमॉरी वास्तविक रूप में कैसे संचित होती हैं तथा सूक्ष्म का स्थूल पर किस पद्धति से कंट्रोल होता है, गहन अनुसंधान का विषय है।

जैन-दर्शन में अण्डा और मांस-भक्षण

—डॉ. जीवराज जैन

(क) जीव क्या हैं?

1. **जैन दर्शन :** जैन दर्शन के अनुसार इस लोक में जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय के रूप में दो रूपी द्रव्य पाये जाते हैं।

2. **जीवास्तिकाय :** जीव एक असंख्य प्रदेशी, चेतन और उपयोग गुण वाला द्रव्य है। हालांकि शुद्ध आत्मा एक अरूपी द्रव्य है।

चेतन गुण एक शक्ति है। यह आत्मा का गुण है। आत्मा आकारवान शरीर से बंधी रहती है।

3. **निर्माण क्रिया :** जीने के लिये जीव सर्वप्रथम पुद्गल-शक्ति के रूप में पर्याप्ति हासिल करता है। यानि जाइगोट से भ्रूण बनने के क्रम में, आत्मा उस उपलब्ध योनि से खास प्रकार के पुद्गल ग्रहण करके एक विशिष्ट 'पौद्गालिक-शक्ति' प्राप्त करती है। उस शक्ति यानि पर्याप्ति से चेतन अपने उदय हुए नाम-कर्म के अनुसार आहार, शरीर, इन्द्रिय आदि का निर्माण करता है।

एक इन्द्रिय वाले जीवों में केवल वनस्पतिकाय के जीव ही कोषाणु आधारित होते हैं। अन्य चार स्थावर एकेन्द्रिय जीवों में विज्ञान-सम्मत जैविक कोषाणुओं के आधार जीव नहीं होते है। उनमें अन्य प्रकार के जीव होते हैं।

4. **विज्ञान में :** आधुनिक विज्ञान अभी तक केवल जैविक कोषाणु-आधारित जीवों को ही पहचान पाया है। अन्य प्रकार के कोषाणुओं की तो कल्पना भी नहीं की गई है।

5. **कोषाणु की रचना :**

1. हर कोषाणु में एक नाभि होती हैं, जिसके चारों तरफ सीइटोप्लाज्म नाम का तरल पदार्थ रहता है। नाभि में गुणसूत्र, डी० एन० ए० (DNA) और जीन्स वगैरह होते हैं।

2. सीटोप्लाज्म में एम्टी-कोन्ड्रिया नामक कोषाणुओं का अपना बिजली घर तैरता रहता है। इसमें ग्लूकोज के साथ ऑक्सीजन के जलने की रासायनिक क्रिया द्वारा ताप ऊर्जा पैदा होती रहती है। ($C_6H_{12}O_2+O_2=E+$)

3. कोषाणु की झिल्ली, विशेष प्रकार के प्रोटीन की बनी रहती है।

4. नाभि में पाये जाने वाले डी० एन० ए० पर जीवन निर्माण व जीवन संचालन के सभी सूत्र लिखे रहते हैं। इन्हीं सूत्रों के मुताबिक आर० एन० ए० (RNA) आवश्यक प्रोटीन बनाता है।

5. शरीर में ये कोषाणु निरन्तर द्विगुणित होते रहते हैं। बढ़ना और बंटना की यह एक विशेष प्रणाली है, जिसको माइटोसिस कहते है।

6. एक नाभि के गुणसूत्र और डी एन ए, मौलिक रूप से अपने माता-पिता के गुण सूत्रों के संयोजन से बने होते हैं। केवल मिटो-कोन्ड्रिया ही अनुवांशिक रूप में माता के डी एन ए वहन करती है।

(B) **निषेचन व जन्म क्रिया :**

1. कम विकसित जीवों में कोषाणु (प्रोकेरिओट्स) स्वतः दो भागों में बंटकर, दो स्वतंत्र जीव बनाते हैं। विकसित जीवों में, खासकर पंचेन्द्रिय जीवों में नर और मादा–दो प्रकार के 'गेमीट्स' की जरूरत पड़ती है।

2. ये 'गेमीट्स' प्रजनन अंगों में एक विशिष्ट क्रिया 'मायोसिस' द्वारा बनते हैं।

3. इस प्रक्रिया में 46 गुणसूत्रों वाला एक कोषाणु, सर्वप्रथम 23-23 गुणसूत्रों वाले दो नये कोषाणु बनाता हैं। इनको 'गेमीट्स' कहते हैं। यानि माता की प्रजनन ग्रन्थि में उत्पन्न अंडे में माता के 23 गुणसूत्र और पिता की ग्रंथि में बने शुक्राणु में पिता के 23 गुणसूत्र रहते हैं।

4. जब इन दो प्रकार के विशिष्ट–कोषाणु का संयोजन होता है, तब इस निषेचन से एक नया कोषाणु 'जाइगोट' बनता है। उसकी माता के 23 और पिता के 23 गुणसूत्र उसकी नाभि में चले जाते हैं। ये मिलकर 23 गुणसूत्रों के (Pair) जोड़े बनाते हैं।

5. **दर्शन शास्त्र के अनुसार** यह जाइगोट 'आत्मा या चेतन' को प्रवेश देने के लिये एक योनि रूप होता है।

1. ठीक उसी वक्त एक स्थानांतरित होती कर्मयुक्त आत्मा, अपने नाम, अपने नाम–कर्म से उदित रचना के मुताबिक उस जाइगोट में प्रविष्ट होती है। इस तरह वह निषेचित अंडा, उसका भौतिक शरीर बन जाता है।

2. यह अरूपी आत्मा, अपने रूपी कार्मण और तेजस् शरीर में, नाम–कर्म के उदयानुसार पुद्गल ग्रहण कर आहार–पर्याप्ति की पौद्‌गालिक शक्ति को विकसित करती है।

6. इस जाइगोट की नाभि के गुणसूत्रों में, 'निषेचन' के समय जीन्स के कोड में एक अचानक बदलाव देखा गया है। जिससे ये माता-पिता के संयुक्त जीन्स से कई प्रकार से भिन्न हो जाते है।

7. इस बदलाव का कारण अभी विज्ञान के पास नहीं है। लेकिन संभवतः यह जीव के अपने पूर्व जन्म के नामकर्म के उदय से–उससे मिलान (match) करने के लिये या उसके प्रभाव के तरह होता है। इस बदलाव के साथ ही भ्रूण बनने की प्रक्रिया संपूर्ण हो जाती है।

8. इस तरह नाभि में तीन प्रकार के (माता, पिता व अपने नाम कर्म के) जीन्स के कोड (Code)अंकित हो जाते हैं। ये तीनों प्रकार के कोड, उस जीव के साथ जीवनभर क्रियाशील रहते है। द्विगुणन द्वारा यह अंकन, हर नये कोषाणु में जाता रहता है। भ्रूण इनके निर्देश पर अंग, प्रत्यंग आदि बनाना शुरू करता है। वृद्धि के दौरान ही विशिष्ट कोशिकाएं बनती है।

9. अंडाणु की बाहरी झिल्ली में छोटे-छोटे सूक्ष्म छिद्र बने रहते हैं। इससे अंडा अपनी श्वासोच्छवास क्रिया संपन्न कर सकता है।

(C) भ्रूण में विकास क्रम :

1. जीव जब जाइगोट में प्रवेश करता है, तो जैन मतानुसार वह अपने कार्मण शरीर के प्रभाव से, खासकर नाम कर्म के उदय से एक पौद्‌गालिक – शक्ति, जिसको पर्याप्ति कहते हैं, हासिल करता है तथा जाइगोट को भ्रूण में बदल देता है। आगमानुसार जाइगोट बनने के 12 मूहूर्त्त बाद तक आत्मा उसमें प्रवेश कर सकती है। प्रवेश करती आत्मा के प्रभाव से ही भ्रूण बनते वक्त जाइगोट की प्रोलीफेज अवस्था के दौरान उसके गुणसूत्रों में बदलाव आता है।

2. ये पर्याप्तियाँ छः (6) प्रकार की होती है। यथा आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छवास, भाषा और मन। इस शक्ति द्वारा जीव अपने ग्रहण किये हुए आहार को पचाकर विभिन्न अंग, प्रत्यंग, इन्द्रिय आदि बनाने में खर्च करता है। सभी पर्याप्तियों का प्रारम्भ एक साथ होता है, लेकिन छहों की पूर्ति क्रमानुसार होती है। सबसे पहले आहार पर्याप्ति की पूर्णता होती है। जीव सबसे पहले 'ओज' यानि सर्वबंध आहार ग्रहण करता है, जो उसके जीवन के अंतिम समय तक चलता है।

3. इस पर्याप्ति-शक्ति से भ्रूण के कोषाणुओं का विकास भिन्न-भिन्न रूप में होता है। इस विकास क्रम में द्विगुणित होते कोषाणुओं में विशिष्टता व भिन्नता (Characterisation) उत्पन्न होती है।

4. इस वृद्धि क्रिया के दौहान, एक समयबद्ध कार्यक्रम के तहत, भ्रूण में छः (6) धातुओं के अनुरूप छः विशिष्ट प्रकार की मूल कोषाणु–श्रेणियाँ बनती हैं। फिर हर श्रेणी में इनके कई 'प्रकार' बनते हैं। ऐसे करीब 200 प्रकार की विशिष्टता वाले कोषाणु, मानव शरीर में बन जाते हैं। एक मानव शरीर में करीब 100 खरब कोषाणु पाये जाते हैं।

5. यानि जीव नाम कर्म की 93 प्रकृतियां लेकर चलता है तथा अपने पूर्व स्थान से 3 समय में अगली योनि में पहुँचता है। फिर एक समय में ही सर्व-बंध ओज आहार (गुणसूत्र जैसा) ग्रहण करता है तथा एक समय में ही अपनी आहार–पर्याप्ति पूर्ण कर लेता है। योनि में अपने चारों तरफ पाये जाने वाले वातावरण से भी भ्रूण अपनी पर्याप्ति से आहार ग्रहण करता है, तथा अन्यं पर्याप्तियों की पूर्णता करता है।

6. यह प्रश्न खड़ा हो सकता है कि यह आहार ग्रहण करने की शक्ति जीव को कैसे हासिल होती है? क्योंकि एक बार 'आहार–पर्याप्ति' हासिल हो गई, तब तो अन्य प्रकार के पुद्‌गल उस शक्ति से ग्रहण करके जीव अन्य पर्याप्तियाँ विकसित करने में सक्षम बन जाता है। हालांकि ये पर्याप्तियाँ, पूर्व कर्मानुसार ही क्षमता रखती है।

एक मतानुसार योनि के संयोग से आत्म-प्रदेशों में जो कम्पन्न होते हैं, उससे गुणसूत्रों के पुद्‌गल, नाम कर्म के उदय से चिपकते हैं। उससे उस योनि में आहार–पर्याप्ति विकसित हो जाती है।

7. हम जो आहार करते हैं, जीवन उसको आहार–पर्याप्ति द्वारा यानि चयापचय (metabolism) शक्ति द्वारा रस धातु में बदलता है। हर प्रकार के आहार, यानि कंवला, ओज और तेज आहार को, धातुओं में बदला जा सकता है। यह रस फिर विशिष्ट कोशिकाओं द्वारा शरीर पर्याप्ति की शक्ति के कारण उपरोक्त छः (6) अन्य धातुओं में बदला जा सकता है। इन्हीं धातुओं के संयोग से अन्य पर्याप्ति–शक्तियों का पोषण होता है।

8. कोषाणु में स्थित जीन ही शरीर को निर्देश देते हैं कि उस कोशिका को किस प्रकार का इन्जाइम बनाना है। जैन दर्शन के अनुसार इन जीन्स को, उदय होने वाले कर्म से निर्देश मिलते है तथा उसका नियंत्रण होता है।

9. पर्याप्तियाँ कार्य–रूप होती है। जीव में इसके अलावा कारण–रूप प्राण भी होते हैं। जब तक आयु प्राण रहता है, तब तक जीव जीवित रहता है। ये 10 प्रकार के होते हैं। 5 इन्द्रियों के, मन, वचन और काया के 3 बल प्राण तथा आयु के 2 प्राण । एकेन्द्रिय जीवों में 4 प्राण होते हैं। असन्नी पंचेन्द्रिय में 9 प्राण व सन्नी पंचेन्द्रिय जीव 10 प्राण होते हैं। प्राण के संयोग से आत्मा जीवन-संज्ञा (life) को प्राप्त होती है।

(D) चयापचय (Metabolism)

1. आहार पर्याप्ति को (आहार संज्ञा) आज की भाषा में चयापचय कहते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान जीव कुछ ऐसी रासायनिक प्रक्रिया करते हैं, जिससे उन तत्त्वों का निर्माण होता है जो नई कोशिकायें बनाने के लिए आवश्यक हैं। यह विशिष्ट इन्जाइम पर निर्भर है, जो जीन के संकेतों द्वारा निर्मित होते हैं। ये भोजन को आवश्यक ऊर्जा में व शरीर पर्याप्ति द्वारा अन्य शरीर घटकों में परिवर्तित कर देते हैं।

2. जैन मतानुसार, कंवलाहार यानि जो आहार मुख से या अन्य साधन से पेट में पहुँचता है, वह चयापचय द्वारा 7 प्रकार की धातुओं में परिणित होता है।

1. रस	2. खून	3. मांस	4. चर्बी
	5. हड्डी	6. मज्जा	7. वीर्य

रस में कोई कोषाणु नहीं होते हैं। बाकी की 6 धातुएँ विशिष्ट कोषाणुओं से बनी होती है। ये कोषाणु 'बढ़ना व बंटना' की विधि से वृद्धि करते हैं।

3. ये कोषाणु 'निगोद' प्रकार के जीव होते हैं। इनमें गुणसूत्र के अलावा प्रोटीन, इन्जाइम वगैरह रहते हैं। 6 प्रकार की जो मूल-कोषाणु श्रेणियाँ शरीर में बनी हुई है, उनमें से प्रत्येक श्रेणी का भोजन व कार्य भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। हर श्रेणी की विशिष्टता उसकी बनावट, कार्य व खाने की भिन्नता से मापी जाती है या मानी जाती है।

4. **खाना व कार्य :**

1. चयापचय में जो पहली धातु-रस बनता है, वह दूध आदि की ग्रन्थियों से सोख लिया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर, उन ग्रन्थियों से कुछ रासायनिक प्रक्रियाओं के बाद, रस रूप में (जैसे दूध) उसे निकाल दिया जा सकता है। चूंकि इस रस में (दूध में) कोई निगोद कोषाणु नहीं होते हैं, अतः निगोद कोषाणु की हत्या नहीं होती है। यह प्राकृतिक आहार के रूप में भक्ष्य माना गया है।

2. रस में कुछ परिवर्तन होने के बाद वह खून में चला जाता है तथा पुष्टिकारक व ऑक्सीजन के रूप में यह खून के साथ पूरे शरीर में घूमता है। यह विभिन्न श्रेणी के काषाणुओं द्वारा, विभिन्न मात्रा में व प्रकार से सोख लिया जाता है। इससे कोषाणुओं की वृद्धि होती है।

3. चूंकि ये कोषाणुओं की श्रेणियाँ, अपने विकास-क्रम को दर्शाती है, हर श्रेणी अपनी विशिष्टतानुसार आहार ग्रहण कर लेती है।

4. खून के कोषाणु विकास क्रम में सबसे निचले पायदान पर, फिर मांस, चर्बी आदि तथा सबसे ऊपर की सीढ़ी पर होते हैं गेमीट्स यानि वीर्य।

5. वैसे तो ये सभी 6 धातुएँ यानि कोषाणु-आधारित निगोद जीव अभक्ष्य माने गये हैं, लेकिन सबसे ज्यादा विकसित होने की वजह से (Gametes) अंडा तो महा-अभक्ष्य पदार्थ की श्रेणी में आ जाता है।

6. इन सभी 6 धातुओं की वृद्धि और विभाजन, रस धातु द्वारा मुहैया कराये गये भोजन पर तथा उनकी अपनी ग्रहण करने की विशिष्ट शक्ति पर आधारित होती है।

5. **आपसी संबंध** (पर्याप्ति, प्राण और धातु) :

1. हम जो आहार करते है, जीव उससे आहार-पर्याप्ति/चयापचय द्वारा 7 प्रकार की धातुएँ बनाता है।

2. इन धातुओं के संयोग से जीव अपनी अन्य 5 पर्याप्तियों का पोषण करता है।

3. और इन 6 पर्याप्तियों में प्राण संचार होने से, जीव जीवित रहता है।

प्राण शक्ति (आत्मा की)	**पर्याप्ति शक्ति (पुद्‌गल की)**	**धातुएँ** (चयापचय की शक्ति द्वारा)
आयु प्राण	1. आहार पर्याप्ति	रस आहार पर्याप्ति से बनता है।
शरीर	2. शरीर पर्याप्ति	खून शरीर और इंद्रिय पर्याप्तियों द्वारा
इन्द्रिय	3. इंद्रिय	मांस यानि विशिष्ट कोशिका – श्रेणी द्वारा
श्वास	4. श्वास	चर्बी यह रस इन धातुओ में
वचन	5. भाषा	हड्डी परिवर्तित होता है। जैसे
मन	6. मान	मज्जा मज्जा की कोशिका श्रेणी द्वारा वीर्य प्रजनन की कोशिका श्रेणी (गेमीट्स)

4. हर कोशिका एक पर्याप्तक बादर निगोद जीव है। (संदर्भ-1) मनुष्य प्रारम्भ में प्रत्येक जीव के रूप में (Zygote) जाइगोट–कोशिका में जन्म लेकर भ्रूण बनाता है।

बाद में कोशिका-वृद्धि व विभाजन द्वारा साधारण शरीर वाला हो जाता है कोशिका से टिस्सू, प्रत्यंग, अंग, अंग तंत्र व शरीर आदि बनते हैं।

5. यानि मनुष्य-शरीर निगोदिया युक्त यानि प्रतिष्ठित शरीर है। कोषाणु विभाजन के बाद ये आपस में जुड़े रहते है तथा मनुष्य के मूल शरीर पर आश्रित रहते हैं।

6. जब कि बेक्टेरिया प्रत्येक शरीरी जीव ही रहता है। विभाजन के बाद हर अनुजात कोषाणु एक स्वतंत्र जीव बन जाता है।

* (निगोद शरीर = औदारिक, तेजस् और कार्मण पुद्‌गलों का पिंड स्वरूप।
* निगोद शरीर में अनन्तानंत जीव एक साथ उत्पन्न होते हैं, मरते हैं–और निगोद शरीर ज्यों का त्यों बना रहता है)

(E) अहिंसा–हिंसा का विवेक : (अण्डो में)

1. साधारणतया यह पता लगाना मुश्किल होता है कि टेबुल पर रखा अंडा निषेचित है या अनिषेचित है। एक टी वी विज्ञापन में यहाँ तक दिखाया जाता है कि अंडो को खरीद कर बनियान के भीतर रख दिया और वे घर पहुँचते-पहुँचते बनियान की गर्मी से चूजा बन जाते है।

2. निषेचित अंडा एक पंचेन्द्रिय जीव है। यह सच्चाई सभी जानते हैं। सभी शाकाहारी अपने विवेक व वैज्ञानिक सच्चाई के आधार पर अण्डे को पंचेन्द्रिय जीव मानकर उसके खाने का त्याग करते हैं। उसकी हिंसा के महापाप से बचते हैं।

(F) **अनिषेचित अंडे :** अब तर्क– (सही माने में एक कुतर्क) पेश किया जाता है कि अनिषेचित अंडा शाकाहारी है।

1. हमने विज्ञान–सम्मत जो अंडे की संरचना देखी है–समझी है, उसके आधार पर निःशंक कहा जा सकता है कि वो शाकाहार तो हो ही नहीं सकता है। वो किसी पेड़ की नहीं बल्कि पंचेन्द्रिय जीवों की उपज है। उसमें माता का पूरा संचित–कोष होता है। इस कोषधारी जीव में नाभि (केन्द्रक) व एम टी-कोन्ड्रिया के सभी DNA व जीन्स मौजूद रहते हैं। यह उच्च श्रेणी का विकसित एक बीज स्वरूप है, जो सचित्त हैं।

2. जैसा कि ऊपर लिखा गया है, जैन दर्शन के अनुसार तो अंडा स्वयं सातवीं धातु है (वीर्य) तथा इसमें सातों ही धातुओं के मूल विद्यमान रहते हैं। माँस, जो केवल तीसरी धातु ही होता है, को भी जब अभक्ष्य माना गया है, तो फिर अंडे को तो खाने का सवाल हीं नहीं–चाहे वो निषेचित हुआ या नहीं।

3. वैज्ञानिकों ने तो हाल ही में अंडे को प्रेरित करके द्विगुणित भी करवाया है। पंचेन्द्रिय जीव से ही पंचेन्द्रिय जीवन, द्विगुणन द्वार पैदा हो सकता है। एक अंडे से, उन्होंने बिना शुक्राणु के संयोजन से, 6 अंडे तक बना लिए। चूंकि वैज्ञानिक जैन दर्शन की सचित्त / अचित्त भाषा में नहीं सोचता है–अतः हमें ही अपने विवेक का उपयोग करना है।

(G) उपसंहार

1. हमारा भारतीय दर्शन बिल्कुल स्पष्ट है। शंका की कोई गुजांइश नहीं है। अनिषेचित अंडों के विभाजन को देखकर लगता है कि विज्ञान भी अब उसकी समझ के नजदीक पहुँच गया है। हमें फक्र है कि हमें शुरू से ही वो दर्शन मिला, जो विज्ञान अब सिद्ध करने जा रहा है। इसमें कोई रूढ़ी नहीं है, बल्कि सत्य का आभाष है। अत:

2. हमें गर्व के साथ अपना मत दूसरों के समक्ष रखना चाहिए। आधुनिकता की दुहाई या पौष्टिकता की दुहाई देनें वालों का खोखलापन सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित कर देना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य बनता है कि सक्षम व्यक्तियों द्वारा इन तथ्यों की सच्चाई को टी वी व अन्य माध्यम द्वारा घर-घर पहुँचाकर, बढ़ते हुए अज्ञान व कुतर्कों से जनता को निजात दिलाये। सही ज्ञान द्वारा जागरूकता बढ़ायें । अंडाहार के भ्रामक प्रचार का भंडा-फोड़ करना चाहिये–खासकर विज्ञान के छात्रों को आगे आकार।

संदर्भ

1. जीवन क्या है– डॉ. अनिल कुमार जैन।

श्रीचन्द्रराज चरित्र

राजकुमार मदनपाल ने उस चित्र को एकटक देखते हुए योगिनी से उसका परिचय पूछा कि बताओ–यह किसका अद्भुत चित्र है? योगिनी ने कहा कान्तिपुरी के राजा नरसिंह देव की राजकुमारी प्रियंगुमंजरी का यह चित्र है। यह गुणंधर कलाचार्य से श्रीचन्द्र कुमार की तारीफ सुनकर उस पर आसक्त हो गई है। उसी के आदेश से श्रीचन्द्र का चित्र लाने को कुशस्थलपुर जा रही हूँ। मदनपाल ने प्रियंगुमंजरी के चित्र को लेने के लिये बहुत कोशिश की, परन्तु वह सफल न हो सका, और योगिनी चली गई। मदनपाल कामज्वर से पीड़ित होकर दुबला होने लगा। मित्रों ने उसके पिता से असली हालत कह दी। उसने कान्ति–नरेश से उनकी कन्या की मंगनी की, किन्तु राजा नरसिंह ने उस मंगनी को ठुकरा दी। इस बात को जानकर मदनपाल अत्यधिक पीड़ित हुआ।

पथिक! वही मैं मदनपाल हूँ। पुष्प द्वारा आकृष्ट भौंरे की तरह उस अनिंद्य सुन्दरी के रूप से खिंचा हुआ मैं यहां आया हूँ।

यहां आकर मैं राज-माली के मकान में ठहरा। मालिन हमेशा राजकुमारी के पास जाती थी। उसके साथ मैंने प्रियंगुमंजरी के पास संदेशा भेजा कि हेमपुर का राजकुमार तुम्हारे चित्र को देखकर तुम्हारे मोहपाश में बंधा हुआ यहां आया है। कृपा करके दर्शन दे दो।

मालिन ने जाकर मेरा संदेशा राजकुमारी से कह सुनाया। मेरे प्रति अनुराग बढ़ाने के लिये कोई उपाय उसने बाकी नहीं छोड़ा। खूब प्रलोभन दिया मगर वह टस से मस न हुई। मालिन ने जब उसे यह कहा कि दुनियां में ऐसा चतुर आदमी खोजने पर भी नहीं मिलेगा तब उसने मुस्कराकर बोलने के लिये अपने होंठ खोले।

उसने कहा, मालिन! अगर तुझे उसकी दक्षता का इतना गर्व है तो ले देख, मैं अभी उसकी चतुराई का पता लगा लेती हूँ।

यह कह कर उसने पुष्प-राशि में से लाल कनेर के एक पुष्प को उठा लिया, और उसे दोनों कानों में धारण कर उसे देखे बिना ही दूर फैंक दिया। इसके बाद उसने एक कमल उठाया और फिर उसे देखकर अपनी छाती से लगा लिया।

फिर उसने मालिन से कहा, हे मुग्धे! तू उसके पास जा और मैंने जो कुछ अभी तेरे सामने किया है उसका उत्तर ला। इसके बाद ओर कुछ बता लगावेंगे।

मालिन ने घर आकर सारी बातें मुझे कह दी। परन्तु मैं राजकुमारी के भावों को न समझ सका और न उसका उत्तर ही दे सका। क्या करूँ? कहां जाऊं? इस प्रकार उसकी चिन्ता में डूबा, इस यक्षमंदिर में आ बैठा हूँ। क्योंकि मैंने किसी से यह सुन रक्खा है कि राजकुमारी सदैव यहां आया करती है। परन्तु हतभागी होने के कारण मेरा उससे यहां भी मिलाप नहीं होता। कारण कि जब वह यहां पर दर्शनार्थ आती है तब उसके साथ की प्रतिहारिणियें मुझे ठोक पीटकर मन्दिर से बाहर निकाल देती हैं। हे भाई! यह मैं अपना दुखड़ा किसके आगे रोऊँ? तुम मुझे बड़े दयालु और परोपकारी मालूम देते हो, अतः कृपा कर मुझे कोई उपाय बताओ।

मदनपाल की यह बात सुनकर कुमार को बड़ी दया आई और उसने अपने मनमें विचार किया, अवश्य गुरु गुणंधराचार्य का पहले कभी इधर आना हुआ है। अहो! राजकुमारी की चतुराई का क्या कहना? इसने अपने भाव पुष्पों द्वारा प्रगट किये हैं। लाल-पुष्प के समान मैंने तुमको अपने में रक्त स्वयं कानों द्वारा सुना है मगर मैं तुम्हारी ओर न तो देखती हूँ और न तुम्हें स्थान ही देती हूँ। दूसरा जो कमल पुष्प उठाया उसका भी भाव यह है कि कमल के समान शुभ्र और सुगन्धित किसी व्यक्ति को जो स्वयं मुझ से विरक्त है परन्तु जिसे मैं प्राणपण से चाहती हूँ और जिसके गुण मैंने कानों से सुने हैं उसे मैंने अपने हृदय में स्थान दे दिया है। कनेर के लाल पुष्प जैसे तुम मदनपाल हो, और कमल पुष्प जैसे वह कुमार श्रीचन्द्र हैं। उसने उपरोक्त भाव ऐसे प्रगट किये थे परन्तु अपने को बुद्धिमान समझने वाला व्यक्ति इतना भी न समझ सका खैर। अब इसे ऐसी सलाह देनी चाहिये जिससे इसके मन को संतोष हो।

फिर कुमार ने उस मदनपाल से कहा, भाई अब क्या करोगे? क्या तुम्हारी कभी चार आंखे हुई हैं? उसने उत्तर दिया, पथिक! न तो मैंने उसे कभी देखा न उसने मुझे कभी देखा है। मित्र! तुम्ही बताओ यह मेरी मनोवांछा कब पूर्ण होगी! तुम परोपकारी हो अतः मुझे कोई मार्ग दिखलाओ।

इतने में शंख की ध्वनि सुनाई दी। वे दोनों वहां से उठकर उपवन में चले गये और मन्दिर की ओर दृष्टि गड़ाकर किसी पेड़ की आड़ में खड़े

हो गये। इतने में सखियां समेत राजकुमारी गाजे-बाजे के साथ आई और मन्दिर में प्रविष्ट हुई। वहां पर खूब नृत्य और गान होने लगा। मृदंग, बांसुरिया और बीणाएँ बजने लगी। मन्दिर कुछ ही क्षण में गान-गृहसा प्रतीत होने लगा।

इसी बीच में धूलिधूसर वस्त्र पहिने किसी स्त्री ने शीघ्र ही मन्दिर में प्रवेश किया। उसके प्रवेश करते ही नाच गान सब बन्द हो गया। कुछ ही समय के बाद वहां से हायरे! की आवाज के साथ रोने की आवाज सुनाई दी। रोती हुई एक सखी शीघ्रता से मन्दिर के बाहर निकल कर उस उपवन में आई।

उसे देख कुमार ने पूछा? हे सुभ्रू! यह आश्चर्यकारी रंग में भंग कैसे हुआ? कृपा कर कहो। मुझे अभी समय नहीं है। सखी ने उत्तर दिया। इतने में दूसरी सखी आ पहुँची और उसने पहली सखी से कहा, बहन जल्दी जाओ और शीघ्र ही केले के पत्ते ले आओ। राजकुमारी बेहोश पड़ी है। यह सुन वह शीघ्र ही गई और केले के पत्ते लाकर उसने उसे दे दिये।

बाद में उसने प्रश्नकर्त्ता से कहा, भद्र! सुनो इस हमारी स्वामिनी ने अपनी सखी को योगिनी के वेष में कुशस्थल भेजा था। कारण कि यह कई दिनों से श्रीचन्द्र पर आसक्त है। इसने अपना प्रेम प्रकट करने के लिये अपना चित्र तैयार करवा कर श्रीचन्द्र के पास भेजा था परन्तु वह दैवयोग से वहां न मिला। यह अभी-अभी जो मलिन वेशधारिणी स्त्री मन्दिर में प्रविष्ट हुई है वही कुशस्थल से लौटी है। इसने जो जो हुआ वह सब अभी इस मन्दिर में राजकुमारी को कह सुनाया है। उसके निराशा भरे वचनों को सुनकर कुमारी मूर्छित हो गई है और उसी को होश में लाने के लिये यह सारी दौड़धूप हो रही है। उसी के सोच में यह सारा रोना चिल्लाना हो रहा है। यही बात रंग में भंग का कारण हुई है। न जाने अब क्या होगा? ऐसा कह कर वह अपनी सखी के साथ चली गई।

उन सब के वहाँ से चले जाने के बाद राजकुमारी के साथ विवाह न करने की इच्छावाले कुमार श्रीचन्द्र ने मदनपाल से कहा, भाई! तुम व्यर्थ ही राज्यसुख और वैभव को छोड़कर इधर उधर भटक रहे हो। यदि इसके बिना तुम्हें सरता ही न हो तो मेरी सलाह सुनो।

संसार में धन ही एक ऐसी वस्तु है जिससे सारे मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं बिना इसके सब निष्फल है। यह सुनकर मदनपाल ने कहा, अगर धन हो तो यह उपाय किस रीति से सफल हो सकता है?

श्रीचन्द्र कुमार उसको लेकर वहां से दूर चला गया। वहां जाकर उसने कहा कि जो बात राजकुमारी की सखी ने कही है उसी के आधार पर हमें यह सारा जाल फैलाना होगा। तुम कुमार श्रीचन्द्र बनो और मैं तुम्हारा सेवक। फिर नगर में चलें और किराये से मकान लेकर रहें। वहां पर तुम याचकों को विशेषकर के गुप्तदान देना। इससे तुम्हारी प्रसिद्धि अपने आपही हो जायेगी। इसके बाद मैं तुम्हारी सहायता के लिये ऐसे ऐसे कार्य करूँगा जिससे राजा को यह बात मालूम हो जायगी कि श्रीचन्द्र चुपके से अपने नगर से यहां आया है। इसके आगे तुम्हारा भाग्य ही प्रमाण हैं, क्योंकि सबसे बढ़कर भाग्य ही एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को इस जीवन संग्राम में सफल और निष्फल बनाती है।

यह सुनकर मदन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उन दोनों ने जैसा विचारा वैसा ही किया। मदन मकान के ऊपरी भाग में बैठा रहता था, और कुमार द्वार पर द्वारपाल के रूप में बैठा उचित कार्यवाही किया करता था।

श्रीचन्द्र के दान की वाहवाही सारे शहर में फैल चुकी थी। छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, सबल-निर्बल सभी की जबान पर उसीका नाम था। शनैः शनैः उसके यशोराशि शारदीय चन्द्रिका के तरह राजा के भव्य सुधालिप्त राज्य प्रासाद में भी फैल गई। राजा भी अपने नगर में श्रीचन्द्र का आगमन सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने मंत्रियों को उसके पास भेजकर आने जाने का मार्ग खोल दिया।

कुमार ने मदन को यही उपदेश दिया कि तुम योगी की तरह मौनी बने रहो। बस यहीं तुम्हारा काम है। अवशिष्ट सभी काम मेरे सिपुर्द हैं। सारे काम द्वारपाल रूपी कुमार ने अपने ऊपर लेकर अपने चातुर्य से, सारे नगर को राजा, राजकन्या और मंत्रियों वगैरह सभी को खुश कर दिया।

राजा उसके आचरणों से इतना प्रसन्न हुआ कि वह स्वयं जाकर उसे अपनी कन्या के साथ विवाह करने की प्रार्थना करने लगा परन्तु कुमार रूपधारी मदन ऊपर से आनाकानी करता रहा। अन्त में बड़े कष्ट से राजा ने उसे अपनी कन्या से विवाह करने के लिये राजी किया।

द्वारपाल ने मंत्रियों से कहा कि अब आप विवाह करने में देर न करो-शीघ्र ही इस काम को पूर्ण करो। राजा ने दूसरे दिन ही गोधूलिक लग्न नियत कर दिया और दो जगहों पर विवाह की सामग्री इकट्ठी करली। श्रीचन्द्र के विवाह के उपलक्ष में पुरवासियों ने प्रसन्न हो कर शीघ्र ही नगरी को अनेकों प्रकार से सजाकर अमर पुरी सा बना दिया।

मदन खुशी के मारे फूला न समाता था। पौफटने से पहले ही वह उठकर अपने नित्य के धार्मिक कृत्यों से निवृत्त हो चुका था। वह अपने हृदय में कई प्रकार की आशाएं और उमंगें लिये महल के झरोखे में बैठा चौराहे और पनघट की शोभा को निहार रहा था। इसी बीच में कुछ पनिहारियों की बातचीत की भनक उसके कानों में पड़ी।

एक सखी ने दूसरी से कहा, सखि! क्यों भागी जा रही हो? दूसरी ने उत्तर दिया, क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है, कि आज हमारी राजकुमारी का विवाह दिन है। कुमार श्रीचन्द्र और कुमारी प्रियंगुमंजरी दोनों ने आचार्य गुणंधर से सब प्रकार की शिक्षा पाई है। अतः विवाह के पहले उन दोनों में पद्मिनी आदि स्त्रियों के भेद और लक्षणों के विषय में बातचीत होगी, और इसके पश्चात् उनका पाणिग्रहण होगा। कारण श्रीचन्द्र उस विषय को भली प्रकार जानता है। अतः आज बड़ाभारी कौतुक होगा। इसीलिये आज जल्दी है। काम काज से निवृत्त होकर फिर राजमहल में जाऊंगी।

मदन इस वार्तालाप को सुनकर बड़ा चिन्तित हुआ और उसने श्रीचन्द्र से यह सारी बात कही, और यह भी कहा कि मित्र! बताओ अब क्या किया जाय?

श्रीचन्द्र ने उत्तर दिया, मित्र! मैं स्त्रियों के चारों भेदों को थोड़ा बहुत जानता हूँ अतः तुम शीघ्र ही उसे लिखकर हृदयंगम कर लो जिससे तुम्हारा यह काम भी पूर्ण हो जायेगा। मदनपाल ने उत्तर दिया, मित्र! अब पढ़ने लिखने का समय नहीं रहा। इधर तो लग्न बेला निकटातिनिकट आ रही है और अब इतने संकीर्ण समय में कोई भी बात किस तरह याद की जा सकती है। कहा भी है—

संदीप्ते भवने तु-कूप-खननं, प्रत्युद्यमः कीदृशः।
आग लगे खोदे कुआ, कैसे आग बुझाय।।

यद्यपि तुम मुझसे उम्र में छोटे हो लेकिन रूप में समान ही हो, और वस्त्राभूषणों के धारण करने पर और भी अधिक सौन्दर्य को प्राप्त हो

जाओगे। अतः मेरी तुमसे यही प्रार्थना है कि तुम मेरा वेष ग्रहण कर लो और तुम्हारा वेष मुझे दे दो और मेरी जगह पर तुम विवाह करके विवाहित राजकन्या को मुझे सौंप दो। कुमार ने उत्तर दिया यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो मुझे यह बात भी स्वीकार है।

फिर क्या था? मदन पाल ने उस द्वारपाल का वेष धारण कर लिया, मगर श्रीचन्द्र ने उसके वस्त्र न पहने। उसने तो अपने ही वस्त्र और आभूषणों से अपने को सजाया।

इधर वहां पर आ करके राज-स्त्रियों ने वैवाहिक विधि के अनुसार उसके घर पर मांगलिक कृत्य किये। इसके बाद वह सुवर्ण और रत्नों के आभूषणों को धारण करके अपने कुण्डलों और नाममुद्रा से शोभायमान हाथी पर सवार हुआ। सिर पर सफेद छत्र लगाया गया। चंवर ढुलने लगे। सुवर्ण और रजत दण्ड लिये छड़ीदार और चौपदार आगे आगे चलने लगे। बन्दीजन स्तुति करते हुए चल रहे थे। बाजे बज रहे थे। नगर के लोग सैनिकों की पंक्तियां आगे आगे चल रही थी। बड़े महोत्सव के साथ वह नगर में होकर राजमहल में पहुंचा। वहां पर तारक भट्ट ने उसे पहचान लिया और उसकी प्रशंसा में बोल उठा—

तइया विवाह समए, धनवइ पमुहाण अट्ठकन्नाणं।
सिरिचन्दो सिद्धिघरे, जो दिट्ठो सो इमों जयउ।।

यह सुनकर राजा वगैरह ने उसे खूब दान दिया और कुमार को गोदी में लेकर राजा सिंहासन पर बैठ गया। कुमार के रूप, नाम-मुद्रा और कुण्डलों को बारंबार बिठाकर कोई शास्त्रीय चर्चा छेड़ने की आज्ञा प्रदान की।

काव्य-शास्त्र-विनोदेन, कालो गच्छति धामताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन च।।

अर्थात्—पण्डित स्त्री–पुरुषों का समय काव्यों की एवं शास्त्रों की चर्चा के विनोद में हंसी खुशी से बीतता हैं, तो मूर्खों का समय जुआ, तास, भांग आदि के व्यसन में, नींद में, या लड़ाई झगड़े में ही बीतता है।

भोजन के बाद का समय था। सूर्य की गति अपूर्व हो रही थी। गर्म से बचने के लिये मकानों में खसखस की टाटियों पर गंगा-गुलाबजल के छिड़काव हो रहे थे। उनसे मीठी तर खुशबू के साथ ठंडी हवा की लहरें निकल-निकल कर दिल और दिमाग को तर कर रही थीं। कोई अंगड़ाइयां

लेते घरों में सोते पड़े थे। कोई पराई निन्दा वार्ता में लगे हुए गप-शप लगा रहे थे। कोई अपने ही भविष्य की चिन्ता में लीन हो रहे थे। कोई ताश, चौपड़, शतरंज के खेलों के साथ जुए के दांव घर कर लक्ष्मी को इधर से उधर कर रहे थे। कोई बीड़ी, भांग आदि के व्यसनों से विपत्तियों का अनुभव करते हुए भी उन्हीं में मजा लूट रहे थे दुकानदार गाहकों के आने की राह देखते-देखते समय बिता रहे थे। कई धार्मिकजन सामायिक में, स्वाध्याय में, एवं भगवान के नाम जाप में तन्मय़ हो रहे थे। कड़े धूप के कारण बाहर निकलने को जी नहीं चाहता था। गृहणियां भोजन से निपटकर सीने-पिरोने, नहाने-धोने, एवं सोने-पोने के कामों में लगी हुई अपनी सुघड़ता को दिखा रही थीं।

ऐसे दुपहरी के समय में कांतिपुरी के राजा नरसिंह की राज-सभा में हेमपुर के राजकुमार--बनावटी श्रीचन्द्र के बदले में चरित्रनायक कुमार श्रीचन्द्र राजकुमारी प्रियंगुमंजरी के साथ लग्न के दिन अपने पौढ़ पांडित्य का प्रदर्शन करा रहे थे। इस अपूर्व प्रसंग को देखने सुनने के लिये राजा ने नागरिक स्त्री-पुरुषों को भी आमंत्रित किया था। राज-सभा खचाखच भरी हुई थी। सबकी आंखें और कान राजकुमार के रूप और ज्ञान को नंबर दे रहे थे।

पिता की आज्ञा से राजकुमारी प्रियंगुमंजरी ने सभा को साक्षी बनाते हुए कुमार से स्त्रियों के भेद और लक्षण पूछे।

उत्तर में कुमार श्रीचन्द्र ने कहा:– अयि पण्डिते! राजकन्ये! पद्मिनी, हस्तिनी, चित्रिणी और शंखिनी ऐसे स्त्रियों के चार भेद होते है। एक-एक भेद के चार चार उपभेद भी होते हैं। ऐसे कुल सोलह भेद शास्त्रों में बताये गये हैं।

इसके लक्षण गंध से, अंगोपांगों से, गति से, दांतों से, नेत्रों से, आदि आदि प्रकारों से जाने जाते हैं। उसका स्वरूप संक्षेप में इस प्रकार है–

पहला भेद पद्मिनी का होता है–उसके शरीर से कमल की सी सुगंधी निकलती है, सारा शरीर सुन्दर होता है, उसमें भी मुख की शोभा विशेष होती है। वह हंस की तरह चलती है। उसके मोगरे की कलियों के जैसे सुन्दर सुडौल स्वच्छ दांत होते हैं। माथे में चिकने सलोने श्याम-सुन्दर लम्बे लम्बे बाल होते हैं। मोटे-मोटे उसके नेत्र और स्तन होते हैं। पद्मिनी की नींद आहार, कामवासना, पसीना क्रोध आदि अल्प होते हैं।

दूसरा भेद हस्तिनी का होता है उसके शरीर में हाथी के मद जैसी गंध होती है। हथिनी के जैसी उसकी मस्तचाल होती है। दांत बड़े केश कुछ मोटे, स्तन और आंखें कुछ छोटी छोटी होती हैं। हस्तिनी की नांद गहरी आहार काम-वासना पसीना क्रोध आदि कुछ अधिक होते हैं।

तीसरा भेद चित्रिणी का होता है उसके शरीर से अनेक प्रकार की गंध निकलती है। उसकी साथलें सुडौल होती हैं। दांत और केश उसके सूक्ष्म होते हैं। तीखी उसकी आंखें होती हैं। ऊंचे उसके स्तन होते हैं। चित्रिणी की थोड़ी नींद चटपटा थोड़ा आहार, अनेक विलास, मध्यम प्रकार का पसीना आदि होते हैं।

चौथा भेद शंखिनी का होता है— उसके शरीर से मछली की सी गंध निकलती है। स्तनों में सुन्दरता होती है। गधी की तरह चलती है। मोटे लंबे उसके दांत होते हैं। उसका केशपाश लूखा और मोटा होता है। आंखें पीली पीली सी होती है। खूब सोनेवाली, खूब खानेवाली, खूब वासना-विकारवाली, और खूब पसीने वली शंखिनी स्त्री होती है। क्रोध तो उसका बहुत दीर्घ काल तक चलता रहता है।

पद्मिनी प्रिय-पुष्पौधा, हस्तिनी मौल्लिक-प्रिया।
चित्रिणी प्रियभूषा च, शंखिनी कलह-प्रिया।।

पद्मिनी का फूलों से प्यार होता है। हस्तिनी को मोती प्यारे लगते हैं। चित्रिणी को अलंकार और शंखिनी को झगड़ा करना ही अच्छा लगता है।

पद्मिनी का हाथ कमल जैसा, हस्तिनी का शंख जैसा, चित्रिणी का मगर जैसा, और शंखिनी का हाथ मत्स्य जैसा होता है।

हे बाले! अब स्त्रियों के शुभ और अशुभ लक्षणों से इनके भेद सुनो। साधारणतया शुभ और अशुभ लक्षणों के अनुसार उनके दो भेद होते हैं। एक तो शुभा और दूसरी अशुभा।

पूर्ण-चन्द्रमा के समान मुखवाली, बालसूर्य के समान कान्तिवाली, बड़े चेहरे वाली और लाल लाल होठों वाली कन्या शुभा कहलाती है। जिस स्त्री के हाथ में अंकुश, कुंडल और चक्र होते हैं वह पुत्रवती और राजा की रानी होती है। जिसके में तोरण और प्रकार का चिन्ह होता है वह नीच कुल में पैदा होने पर भी रानी बनती है। जिसके हाथ में मन्दिर, कमल, चक्र, तोरण, छत्र और कुंभ होता है वह मोर का छाता दिखाई देता है वह स्त्री

पुत्रपौत्रों वाली होकर बहुत फलती फूलती है और रानी बनती है। जो स्त्री हरिणी के समान दृष्टिवाली, कोमल अंगवाली, हरिणी के समान गर्दन और उदर वाली तथा हंसी के समान चाल वाली होती है। वह अवश्य रानी होती है। जिस स्त्री के घुंघराले बाल और गोल मुंह तथा दक्षिण की ओर भोंरी वाली नाभि होती है वह बड़ी प्रेम पात्र होती है। जिसकी उंगलियां बड़ी-बड़ी और लम्बे-लम्बे केश होते हैं वह भी बड़ी उम्र वाली और धन धान्य से भरपूर होती है। जो स्त्री कृष्ण की तरह श्याम, चम्पक पुष्प के समान गौर वर्णवाली स्निग्ध अंग और बदनवाली होती है वह बड़ी सुखी होती है। जिस स्त्री के हँसने पर ललाट में स्वस्तिक का चिन्ह होता है तो वह हजारों वाहनों सवारियों की स्वामिनी होती है। जिसके बाँए पार्श्व में, गले में अथवा स्तनों पर मस्से, तिल आदि कोई चिन्ह हो तो वह सर्व प्रथम पुत्र पैदा करती है जो स्त्री कम पसीने वाली, थोड़े रोएं वाली, कम आहार और कम निद्रावाली होती है और जिसके शरीर पर रोएं नहीं होते हैं वह उत्तम लक्षणों वली कही जाती है। जिस स्त्री के जांघों स्तनों और होठों पर रोएं होते हैं वह शीघ्र ही विधवा हो जाती है। जिसकी पीठ में भौंरी होती है वह अपने पति का नाश कर देती है। हृदय में आवर्त (भौंरी) वाली पतिव्रता और कमर में भौंरी वाली स्त्री स्वैरिणों होती है। जिसकी ललाट, पेट और योनि (गुह्यस्थान) लम्बी होती है वह अपने पति, ससुर और देवर के लिये घातक होती है। मनुष्य को चाहिये कि वह काली जीभवाली, लम्बे होठों वाली, पीली आंखों वाली, घर्घर आवाज वाली, अत्यन्त गौरी और अत्यन्त काले रंग की इन छः प्रकार की स्त्रियों के साथ विवाह न करे।

जिस स्त्री के बिना हंसे भी गालों में गढ्ढे पड़ते हैं ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और वह कभी भी अपने पति के घर नहीं ठहरती। जिस स्त्री की कनिष्टिका और अनामिका उंगली यदि पृथ्वी को न छूती हो तो वह अवश्य ही युवावस्था में जारों के साथ रमण करती है इसमें कोई संदेश नहीं है। जिसके जैसा मुख हो वैसा ही गुप्त स्थान हो, जैसी आंखे हो वैसी ही कमर हो, जैसे हाथ हों वैसे ही पैर हों, बाहुओं के जैसी ही जंघाएं हों और जो कौए के समान स्वर वाली कौए के सदृश जांघोवाल पीठ में रोएं वाली बड़े-बड़े दांतवालीं हो वह कन्या विवाह के बाद दस महीने में ही पति के मृत्यु का कारण बन जाती है इसमें कोई संदेह नहीं।

सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार विकट अंगुलियों वाली छिदे-छिदे पैर वाली, धम-धम चलने वाली, ऐसी स्त्री वैर बसाने वाली होती है। अति दीर्घ, अतिहस्य, अति स्थूल, अतिकृश, अति-गौर और अति-कृष्ण, ऐसे छः तरह के भग, दुर्भग कहलाते हैं। कछुए की पीठ के समान उन्नत, हाथी के स्कन्ध समान, कमल के पत्ते के समान, सुसंवृत, अनुष्ण और अम्बर के समान सद्वृत्त, ये छः प्रकार के भग सुभग कहलाते हैं।

अब कुमार विवाह के योग्य और विवाह के अयोग्य स्त्रियों के लक्षण बतलाते हैं।

पीनोरू पीनगंडा, लघुसमदशना, दक्षिणावर्त-नाभिः
स्निग्धांगी चारू-सुभ्रुः, पृथुकटिजघना, सुस्वरा चारूकेशी।
कूर्मपृष्ठा-ह्यनुष्ण-द्विरदसम-पृथु स्कंधभागा सुवृत्ता।
सा कन्या पद्मनेत्रा, सुभग-गुणयुता नित्यमुद्वाह-योग्या।।

अर्थात्– पुष्ट जंघोंवाली, प्रफुल्ल और पुष्ट गालों वाली, छोटे-छोटे बराबर दांतों की पक्तिवाली, दक्षिण की ओर भंवरीयुक्त नाभिवाली,स्निग्ध शरीर वाली, सुन्दर भौंहोंवाली, विशाल-जघन वाली, मधुर-स्वर एवं सुन्दर केशोंवाली, सुभग-पद्म के समान विकसित नेत्रोंवाली ऐसी प्रधान गुणवती कन्या विवाह के योग्य होती है। विवाह के अयोग्य स्त्रियों के सामुद्रिक-लक्षण ये हैं—

पिंगाक्षी, पूपगंडा खर-परुषरवा, स्थूलजंघोर्ध्व-केशी
लम्बौष्ठी, दीर्घवक्त्रा प्रविरलदशना श्यामताल्वोष्ठजिह्वा।।
शुष्कांगी संहितभ्रू विषम-कुचयुगा, नासिकाक्रान्त-वक्त्रा
सा कन्या वर्जनीया सुख-सुतरहिता भ्रष्टशीलाच नारी।।

अर्थात्—पीले नेत्रों वाली, पूए के समान छिद्रयुक्त गालों वाली, गधे के समान भारी आवाज वाली। मोटी जाँघों वाली, खड़े केशोंवाली, लम्बे होठ और मुँह वाली, छोटे-छोटे दाँतों वाली, श्याम रंग के तालु, होठ और जीभवाली, सूखे दुर्बल शरीरवाली, छोटी भौहें और छोटे बड़े स्तनों वाली, लंबी चौड़ी-नाक वाली, शीभ्रष्ट कन्या के साथ विवाह नहीं करना चाहिये।

शास्त्र तो विवाह के बाद भी अयोग्य स्त्री के त्याग की आज्ञा देता है। जैसेः-

विवाद-शीलासनमर्द-सूरिणीं, परानुकूलां परपाक-पाकिनीम्।
आक्रोशिनीं शून्यगृहोपवेशिनीं, त्यजस्व भार्यादश पुत्र-पुत्रिणीम्।।

अर्थात्— रात दिन कलह और विवाद करने वाली, दूसरों के अनुकूल चलने वाली, दूसरों के यहां खाना पकाने वाली, निन्दा करने वाली, सूने घर में सोने वाली स्त्री को चाहे वह दस पुत्र व पुत्रियों वाली ही क्यों न हो उसे बिना विचार किए ही त्याग देना चाहिये।

इस प्रकार कुमार श्रीचन्द्र ने प्रियंगुमंजरी के प्रश्नों का सुन्दर और स्पष्ट रूप से उत्तर दे उसे संतुष्ट कर दिया। प्रियंगुमंजरी ने भी प्रसन्न होकर उनके गले में वरमाला डाल दी। विवाह मंडप में कुमार का विधि पूर्वक पौंखण (परीक्षण या पोंखना) आदि के हो जाने पर मातृका स्थान पर वरवधू को लाया गया। शास्त्रोक्त विधि से करणीय और आवश्यकीय कृत्यों को करके सुन्दर हरे बांसों से बनी, चारों कोनों में चार कलशों वाल चंवरी में अग्नि की साक्षी से फेरे फिराये गये। दहेज में यथायोग्य सोना, चांदी, मणि, रत्न, दास, दासी, हाथी, घोड़े राजा ने बड़े भारी उत्साह के साथ दिये। धूमधाम से सवारी के साथ श्रीचन्द्र और प्रियंगुमंजरी को उनके निवासस्थान पर ले जाया गया। लोगों ने परस्पर इस प्रकार कहा—

रूप, विद्या, कुल, बुद्धि और गुणों में यह कुमार एक ही है वैसे ही यह राजकन्या भी सौंदर्य और शील में एक ही है। इन दोनों का संयोग सुवर्ण के साथ रत्न का, इन्द्र के साथ चन्द्र का और रत्नादेवी के साथ सूर्य का जैसा सुन्दर योग हुआ है उन्हीं के समान इन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध भी उतना ही प्रशंसनीय हुआ है।

कुमार श्रीचन्द्र विवाह के मांगलिक कृत्यों से निवृत्त होकर घर में प्रवेश करके, सबको यथास्थान स्थापन करके, याचकों को दान दे करके अपने महल में विश्राम के लिए चला गया।

पूज्य पतिदेव के महल में आ जाने पर सुन्दरी प्रियंगुमंजरी भी पति के पास प्रसन्नता के फूल बखेरती हुई पहुँच गई। काव्यालाप और साहित्य चर्चा हो रही थी। परस्पर एक दूसरे के पांडित्य का परिचय हो रहा था। मुखावलोकन और संभाषण के आनन्द का अमृत पिया जा रहा था। लहराती हुई आनन्द की लहरों से वे दोनों किसी अनिर्वचनीय सुख का अनुभव कर रहे थे इतने में मदनपाल ने वहां पहुँचकर आंख के इशारे से श्रीचन्द्र को प्रतिज्ञा की याद दिला दी। श्रीचन्द्र अपनी प्रतिज्ञा की याद दिला दी। श्रीचन्द्र अपनी प्रतिज्ञा को याद करके शौच के बहाने से ज्योंही महल से निकला, प्रियंगुमंजरी भी पानी

लेकर उसके पीछे पीछे चली। कुमार ने उसे वहीं रोक दिया। खुद ऊपर से नीचे चला आया। अपने कुण्डल, मुद्रिका एवं प्राचीन वेश को लेकर बोला- -मित्र! मैंने तुम्हारी मनोभिलाषा पूर्ण कर दी है। मैं अन्यत्र जाता हूँ। अब गृह संरक्षण का भार तुम्हारी योग्यता पर निर्भर है।

मदनपाल ने उत्तर दिया—भाई! तुमने मेरे लिय सब कुछ किया। मैं बदला नहीं चुका सकता। एक प्रकार से आपने मुझे जीवन दान दिया है। अब आप अपनी इच्छानुसार जा सकते हो। प्रत्येक व्यक्ति का कष्ट दूर करने में समर्थ बने रहो, यही मेरा हार्दिक आर्शीवाद है। कुमार श्रीचन्द्र बाहर निकल गया।

मदनपाल ने प्रसन्नता के साथ आँखों में सुरमा लगाया, पान चबाया, कुमार के विवाह क वेश धारण कर, चिरकाल की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये, भारी उमंग को हृदय में लिये वह महल में पहुँचा। अजीब प्रकार स आते और बैठते हुए निस्तेज मदन को देखकर प्रियंगुमंजरी के मन में संदेह हुआ। वह बिजली की तरह चमक कर बाहर निकल गई। उसने अपनी सखियों से कहा-यह अजनबी पुरुष मेरे महल में कौन घुस आया है। अरी सखियों! जरा देखो तो सही। वेशभूषा तो मेरे पतिदेव के जैसी ही मालुम होती है परन्तु व्यवहार, आचरण और सूरत में जमीं आसमान का अन्तर हो गया है। सखियों ने कहा—स्वामिनि! आप पागल तो नहीं हो गई हैं जो इस प्रकार कह रही हैं। भला पति के सिवाय यहाँ अभी दूसरा पुरुष कौन आ सकता है? उनकी वेशभूषा स ही निर्णय कर लेना चाहिये।

प्रियंगुमंजरी ने सखियों को विश्वास दिलाते हुए कहा—सखियों! अगर तुम मेरी बातों क विश्वास नहीं करती हो तो तुम स्वयं जाकर उसे पहले की बातचीत और प्रेम भरे वचनों को पूछो, और उसके मूँह से कहलाओ। इस प्रकार उसकी जाँच करते देखो, कि वह वहीं है या दूसरा।

सखियों ने आज्ञा पाकर वैसा ही किया। उक्ति प्रत्युक्ति के अनन्तर उनको यह निश्चय हो गया कि यह वह श्रीचन्द्र नहीं है। यह तो कोई दूसरा छली पुरुष है। तब वे वहां से बाहर चलीं आई और कहने लगीं—स्वामिनि! वास्तव में आपका कहना सच है। यह कोई अन्य ही है। हमें द्वारपाल से जाकर पूछना चाहिए। यह कहकर वे द्वारपाल के स्थान पर पहुँची मगर उन्हें वह भी दिखाई न दिया। यह देख सखियों को वहीं छोड़कर राजकुमारी स्वयं

अपनी माता के पास चली गई इस प्रकार पुत्री को आई देख माता को कुछ सन्देह हुआ, और उसने निकट से पूछ– बेटी! कुशल तो है? तुम ऐसी हालत में ऐसे कैसे चली आई हो? दुःखी हृदय से राजकुमारी ने उत्तर दिया- माताजी! बड़ा अनर्थ हो गया है। जिनको मेरी जिन्दगी सदा के लिए सौंपी थी वे तो कहीं दिखाई नहीं देते। परन्तु उनकी जगह कोई अन्य ही व्यक्ति उनका वेश बनाकर आ उपस्थित हुआ है। यह सुनकर माता बड़ी दुःखी हुई। माँ ने राजा से सारा हाल कह सुनाया। राजा भी इस दुखदायक अद्भुत घटना को सुनकर अतीव दुःखी हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल उस पुरुष को बुलाकर बड़े गौर से देखा। राजा को भी निश्चय हो गया, कि यह कोई अन्य व्यक्ति प्रतीत होता है। अपने विश्वास को दृढ़ करने के लिये राजा ने कुण्डल और मुद्रिका दिखाने को कहा। वे दोनों चीजें तो श्रीचंद्र के साथ चलीं गईं थीं अतः वह न दिखा सका। पद्मिनी आदि स्त्रियों के सम्बन्ध में पूछा तो उसका जबाव भी वह न दे सका। राजा ने नाराज होकर गीली बैतों से पीटने की आज्ञा अपने सिपाहियों को दे दी। बैंत उठते ही वह थर-थर काँपने लगा और मारे डर के उसने राजा को वृत्तान्त कह सुनाया।

वह कहने लगा–मेरा नाम मदनपाल है। राजकुमारी के चित्र को देखकर मोहित हो गया। राजकुमारी के चित्र को पाने के उद्योग में मैं यहां आया। मेरी एक ब्रह्मचारी बाबा स भेंट हुई। उसने मेरा दुखड़ा सुनकर मेरे ही कहने से मेरे वेष बनाकर इस कन्या से विवाह किया पूर्व प्रतिज्ञानुसार उस परोपकारी ब्रह्मचार ने मुझे दहेज समेत इस कन्या को सौंप दी। वह कहीं चला गया पता नहीं वह अब कहां है। उसी की बुद्धि से मैंने इतना रास्ता पार किय।

इस प्रकार उसके वचन सुनकर राजा ने और पुरवासियों ने कहा– वह अवश्य ब्रह्मचारी बाबा श्रीचन्द्र ही था, वह श्रीचन्द्र ही था इसमें केई संशय नहीं। उपस्थित तारक भट्ट ने भी कहा।

राजा ने श्रीचन्द्र की इधर उधर खोज करवाई परन्तु वह कहीं न मिला। कुमारी प्रियंगुमंजरी करुण विलाप करने लगी। सुनने वालों की आंखों में भी आंसू छलछला गये। उसके मुंह से निकलने वाले वियोगजन्य वचन इतने दयनीय थे, जिनको सुनकर पालतू मयूरों ने नृत्य छोड़ दिया। पालतू हिरणों ने घास खाना छोड़ दिया। यहां तक कि उसके दुःख से सहानुभूति प्रकट करने के लिए उद्यान के पेड़ों ने भी फूलों के आंसू बरसाए।

पुत्री को इस प्रकार रोती कलपती देखकर पिता के धैर्य क बांध भी टूट गया। राजा नरसिंह देव अपने आप को संभाल न सका। वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा और उसके बाल बिखर गये। सारा राजकीय वेष अस्तव्यस्त हो गया। मुश्किल से होश में आने पर दिल को मजबूत करते हुए पुत्री से कहा–बेटी! रोओ मत। धैर्य रखो। गुणों की परीक्षा आपत्ति में ही होती है।

धीरज धर्म मित्र अरु नरी,
आपत काल परखिये चारी।।

तुम अपने पवित्र और सच्चे प्रेम पर श्रद्धा और विश्वास रखो। वह अवश्य ही तुम्हें मिलेगा, लेकिन मिलने पर तुम उसे पहचान तो लोगी?

पुत्री ने उत्तर दिया—पिताजी! यहां पर जिसे मैंने देखा है, जिसके सथ सुभाषित गोष्ठी की है, उस पति को मैं भूल नहीं सकती हूँ। उन्हें मैं हर तरह से पहचान सकती हूँ। यह मुद्रिका उन्होंने मुझे प्रेम पूर्वक दी है। अतः जब तक पति का मिलाप न होगा तब तक मैं इस मुद्रिका की पूजा करती रहूँगी।

इधर राजा की आज्ञा से मंत्रियों ने मदनपाल के पास से सारी दहेज सामग्री छीन ली। रानी द्वारा दी हुई अंगूठी उसके पास न मिली तब उन्होंने उससे पूछा–बताओ, वह मुद्रिका कहाँ है? मदन ने उत्तर दिया–सासू द्वारा दी गई अंगूठी तो वह मेरे पास से स्वयं ले गया । यह सुन राजा सहित सब लोग बड़े हर्षित हुए और कुमार श्रीचन्द्र के परोपकार, धैर्य, बुद्धि तथा साहस की एवं कन्या के भाग्य की सराहना करने लगे। राजा ने कुछ धन देकर मदनपाल के जिन्दा छोड़ दिया। अपने विश्वासपात्र सेवकों को श्रीचन्द्र की खोज में भेजा। आसपास के सारे प्रान्त छान डाले। कुमार का कहीं अतापता न चला। तब वे निराश होकर लज्जित अवस्था में राजा के सम्मुख उपस्थित हुए। राजा उनकी बात सुनकर दीर्घ और गर्म सांस छोड़ते हुए बोला–किसी अच्छे दिन श्रीचन्द्र की खोज में सुयोग्य मंत्रियों को कुशस्थलपर भेजूँगा। इस प्रकार सब अपने अपने स्थान पर चले गये और अपने अपने काम में लग गये।

ग्रीष्मऋतु अपने पूर्ण यौवन पर थी। सूर्य अपनी प्रचण्ड किरणों से जगत के प्रत्येक प्राणी के तपा रहा था। सताप से बचने के लिये सभी प्राणी

आश्रय ढूंढ़ रहे थे। विशाल वट-वृक्ष पशु-पक्षियों की एक खुश-हाल बस्ती बन रहा था। पक्षियों का कलरव बड़ा ही सुहावना लग रहा था। गर्मी की अधिकत से पशु-पक्षी अपने जन्मजात बैर को भुलाकर एक साथ सूर्य के प्रखर-ताप से अपना बचाव कर रहे थे। जल को छोड़कर संसार की सभी वस्तुएँ नीरस सी प्रतीत हो रही थीं। परोपकारी वृक्ष सब पर छाया किये हुए स्वयं एक तपस्वी के समान तप रहे थे।

ऐसे विकट समय में हमारा चरित्र नायक कुमार श्रीचन्द्र शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित क्षत्रिय वेश को धारण करके एक बड़े भारी जंगल में आ निकला। जोर की प्यास लग रही थी। किसी ऊंचे थान पर चढ़कर दूर तक जलाशय को ढूंढ़ने के लिये दृष्टि दौड़ाई। कुछ ही दूर पर एक तालाब देखा, उसके किनारे एक दीप्तिमय तेजःपुंज भी दिखाई दिया। कुमार वहीं जा पहुँचा। अपने अंगोछे से जल को छानकर पिया, और वहां पड़े तेजःपुंज संपन्न चन्द्रहास खड्ग के देखा। कुमार ने उसे उठा लिया और सोचा यह किसी देव मनुष्य या विद्याधर की तलवार है।

इसका स्वामी कौन है? यह जानने के लिये कुमार ने इधर-उधर पता लगाया। पर कोई दिखाई न दिया– तब कुमार ने माना कि या तो कोई इस तलवार को यहां भूल गया है, या आकाश में चलते-चलते असावधानी स किसी देव-विद्याधर की पड़ गई मालूम देती है। तीक्ष्णता की परीक्षा के लिये पास खड़ी बांस की झाड़ी पर कुमार ने उसे चलाई। नीचे की तरफ मुँह किये लटकता हुआ एक आदमी अधकटा कुमार को दीख गया। कुमार को बड़ा खेद हुआ। पश्चाताप करता हुआ वह कहने लगा–

अंहो! अज्ञान से यह भारी पाप मुझसे हो गया। निरपराधी के मारने से मुझे नरक में भी शायद स्थान मिलना कठिन है। उस अधमरे आदमी के हाथ में तलवार पकड़ाकर कुमार ने कहा–भाई! भूल में मेरे हाथ से तुम्हारे चोट आ गई है। मैं अपराधी हूँ। क्षमा करके अपनी तलवार ले लो, और जो दण्ड देना चाहो मुझे दे दो।

बोलने में असमर्थ उस अधकटे आदमी ने तलवार वापस करते हुए इशारे से जल की मांगनी की। कुमार ने उसे पानी लाकर पिलाया। थोड़ी देर बाद उसके प्राण-पखेरु उड़ गये। कुमार श्रीचन्द्र इस दुर्घटना से दुःखी हुआ। बिना कुछ खाये पिये ही वह आगे की ओर बढ़ गया।

रात हो चली थी। चन्द्रहास खंड ही उसका एक मात्र संगी था। मार्ग के कष्टों और अनजान में हुई नरहत्या के दुःख से वह सदा की अपेक्षा आज अधिक थक चुका था। सामने उसे एक सघन वट-वृक्ष दिखाई दिया। कुमार ने उसी पर अपना पड़ाव डाल दिया। ज्योंही वह आस पास देखता है। डाभ के पुआल से बनी एक शय्या उसे दिखाई दी। उसे देखकर—अवश्य ही यहां कोई यात्री पहिले सोया होगा—ऐसा सोचकर कुमार ने उस शय्या को अपने सोने योग्य मानकर उसकी देखभाल-पडिलेहना की।

शय्या को ऊंची नीची करके देखने पर उसके नीचे लकड़ियों से ढ़ंकी एक खोखल कुमार को दिखाई दी। आश्चर्य से लकड़ियों को हटाकर क्षणभर में वह साहस क पुतला-कुमार उसमें उतर गया। वृक्ष के मूल में जा पहुँचा-–वहां पर पड़ी हुई एक विशाल पत्थर की शिला को हटाकर नीचे के गड्ढे में हाथ डालकर टटोला तो उसे नीचे उतरने की एक सीढ़ी का पता चला। शनैः शनैः वह अपनी हिम्मत के बल पर नीचे उतरा। उसके आगे एक खोह उसे दिखाई दी। कुमार बात का पक्का, हिम्मत का धनी और आन का सच्चा था। वह कभी निराश होनेवाला जीव न था। भय तो उसे छू तक नहीं गया था। वह बिना हिचकिचाहट के उस खोह में भी जा घुसा। वहां पर उसने भूगर्भ में एक विशाल भवन देखा। रंगबिरंगे रत्नों की दीपमालाओं के प्रकाश से प्रकाशित वह दुमंजिला मकान इन्द्रधमुष की भांति शोभा दे रहा था।

कुमार पहले पहली मंजिल में घूमा, फिर बाद में दूसरी मंजिल में पहुँचा। वहां पर तरह-तरह की रंग विरंगी मणियों से जड़े हुए, अनेक प्रकार के चित्रों से चित्रित, देश विदेश की मनुष्योपयोगी, धातु, काष्ठ, काच आदि की सभी सामग्रियों से शोभायमान एक सुसज्जित कमरे में जाकर वह एक रत्न-जड़ाऊ पलंग पर बैठ गया।

थोड़ी देर विश्राम कर लेने के पश्चात् कुमार ने आसानी से भीतर के कमरे के द्वार खोल दिये, और वह उसके अन्दर भी जा घुसा। वहां पर उसने एक बंदरी को रत्न जड़ाऊ पलंग पर सोते हुए देखा। यह देखकर वह दंग रह गया। इधर बानरी भी उसे चकित देख शय्या को छोड़ के एक दम उठ खड़ी हुई, और आकर उसके चरणों में गिर पड़ी। उसने उसके वस्त्र का अंचल पकड़ कर पलंग पर बैठाया। पलंग पर बैठकर आश्चर्य चकित कुमार ने उस बंदरी से पूछा चेष्टा से तो तुम मानवी दिखाई पड़ती हो और वैसे तुम बानरी हो यह क्या बात है? मैं इस रहस्य को जानना चाहता हूँ।

यह सुनकर वह रोने लगी और उसने दीवार में बने हुए एक आले की ओर इशारा किया। वह बार-बार अपने नेत्रों और आले की ओर हाथ से इशारा करके कुमार को समझाने लगी। उसके इशारे से कुमार उठ कर उस आले की ओर गया उसमें से उसने अंजल भर हुई कुप्पियाँ दो बाहर निकाली। एक में सफेद और दूसरी में काला अंजन भरा हुआ था। उसने बानरी के संकेत से उसकी आंखों में काला अंजन डाल दिया। उस अंजनकी महिमा से वह सुन्दर दिव्य वस्त्र और आभूषणों को धारण की हुई एक कन्या बन गई। उसे इस प्रकार मानवी बनी देख आश्चर्य में डूबे हुए कुमार ने उसस पूछा,—भद्रे तुम कौन हो? और तुम्हें किसने ऐसी दशा में पहुँचाया है? इस स्थान का नाम क्या है? इन सब बातों का उत्तर देकर तुम मेरे सन्देह को दूर करो।

कुमार के सन्देह का निराकरण करती हुई हर्ष और लज्जा के वशीभूत उस कन्या ने कहा हे वीरवर! हेमपुर के स्वामी मकरध्वज नरेश की महारानी मदनावली के गर्भ में मेरा जन्म हुआ है। माता-पिता ने मेरा नाम मदनसुन्दरी रक्खा है। मैं अपने भाई मदनपाल की छोट बहन और माता पिता की बहुत प्यारी बेटी हूँ। शुक्लपक्ष में चन्द्रकला की तरह दिन व दिन बढ़ती हुई मैं क्रम से तरुणावस्था को प्राप्त हुई। मैं मनुष्यों के सामुद्रिक लक्षणों की जानकार होनें के नाते यह प्रतिज्ञा कर चुकी थी, कि जो कोई पुरुष बत्तीस लक्षणों से युक्त होगा, उसी के साथ विवाह करूँगी।

एक समय मेरा भाई मदनपाल किसी चित्रपट पर राजकुमारी प्रियंगुमंजरी के रूप व सौन्दर्य को देखकर उस पर मोहित हो गया, परन्तु वह कुमारी राधावेध के कर्त्ता कुमार श्रीचन्द्र में पहले से ही प्रेम वाली थी। इसलिये उसने मदनपाल की ओर कुछ भी ध्यान न दिया। तो भी मेरा भाई प्रियंगुमंजरी के प्रेम में मोहित होकर घर से कहीं निकल गया। प्रेम का पंथ बड़ा ही विकराल है। कहा भी है :—

धर मोम के दांतों को आनन से
चने लोह के चारु चबावनो है,
मनु आंख विहीन को देखनो है
बिन पांव को पंथ चलावनो है।
बिन डोर पतंग उड़ावनी है

बिन बुद्धि को पाठ पढावनो है,
यह प्रेम को पंथ कराल महा
तरवार की धार ये धावनो है।।

जब से भाई मदनपाल घर से निकला है, वापस लौटा ही नहीं। एक रोज मेरे पिताजी की राज-सभा में एक बंदी-कवि ने मधुर स्वर से कवन किया कि–

दान-व्यजन कोद्भूतः-श्रीचन्द्रस्य यशोऽनिलः।
नव्यः कोऽप्यर्थि धूलीनां, पुञ्जं सम्मुखमानयत।।

अर्थात्–महाराज प्रतापसिंह के चिरंजीव श्रीचन्द्र कुमार के दान रूप पंखे से पैदा होने वाला कोई यश-रूप नवीनवायु याचक रूप धूली समूह को आपके सन्मुख लाया है।

यह सुन मेरे पिता हेमपुर-नरेश ने उस कवि का उचित सत्कार करके उसे विदा किया उसके बाद मंत्रियों के साथ परामर्श करके श्रीचन्द्र कुमार के साथ मेरा विवाह करने का निश्चय किया गया।

इस चर्चा से प्रसन्न-मनवाली मैं समवयस्क सखियों के साथ अपने फूल बाग में मनोरंजन के लिये गई। रंग-बिरंगी फूलों से मेरे लिये हार, गजरे, कर्णफूल, आदि सखियों ने तैयार किये। इतने में कोई विद्याधर आकर मुझे उड़ा ले चला। उसने अपनी घरवाली के डर से मुझे यहां एकान्तवास में ला रखी है। यहां रहते हुए मुझे पांच दिन बीत गये हैं।

विद्याधर ने मेरे साथ विवाह करने का प्रस्ताव रक्खा है मगर मैंने उसे ठुकरा दिया है। जब मैं अपने भाग्य पर रोने लगी तो उसने कहा– सुभगे! रोती क्यों है? मैं वैताढ्य निवासी रत्नचूड विद्याधर हूँ। इस समय गोत्री नरेश ने मेरे मणिभूषण नगर पर अधिकार कर लिया है। इस लिये मैं सपरिवार वहां से निकला हुई, बाहर ही रहता हूँ।

उसने मुझसे कहा एक दिन की बात है मैं पृथ्वी पर घूमता हुआ, कुशस्थलपुर नगर में पहुँचा था। वहां एक उद्यान में हाथी, घोड़े, ऊंट, रथ, और सेना आदि का पड़ाव पड़ा था। उनके बीच में जरी से काम किया हुआ एक मखमली तंबू लगा था। उसमें सोने के पलंग पर सखियों से घिरी हुई एक पद्मिनी को मैंने बैठी देखी। उस समय वह ससुराल से अपने भाई के साथ अपने पीहर-पिता के घर जा रही थी। मैं उसके देखकर मोहित हो

गया। रूप और सौन्दर्य की मूर्ति-उस पद्मिनी के अपहरण की इच्छा से मैं अदृश्य होकर वहां एक दिन ठहरा। परन्तु उसके शील के प्रभाव से एवं उसके पति द्वारा की हुई रक्षा के कारण मैं उसे उड़ाने में असमथ रहा।

वह आगे कहता गया—तब मैं निराश होकर वहां से चल पड़ा। उसके समान रूपवाली स्त्री की खोज करने लगा। खोजते-खोजते तू मुझे दिखाई दी, और मैं तुझे उड़ाकर यहां ले आया हूँ। अब मैं तेरे साथ विवाह करूँगा।

यह कहकर विद्याधर ने सफेद अंजन को आंजकर मुझे वानरी बना दी। कुछ फल आदि खाने पीने क सामान रखकर वह यहां से चला गया। इसके बाद तीसरे दिन वह फिर आया, इस काले सुरमे के योग से मुझे वापस स्त्री रूप बनाकर कहने लगा—सुन्दरी! डरती क्यों है? ले ये मादन, ये बड़े स्वादिष्ट हैं। इसके खाने से मन की अभिलाषा पूर्ण होती है–देख मैं ज्योतिषी से अभी लग्न दिखा कर आया हूँ। गुरुवार की दोपहरी में लग्न ठहरा है। इसीलिये मैं सारी विवाह की सामग्री यहां लेकर आया हूँ तूं इसे सम्हाल कर रख। मैं बुधवार की रात्रि नें या गुरुवार के प्रातःकाल में निश्चयरूप से आऊंगा इसमें तनिक भी सन्देह मत करना।

यह सुनकर मैंने उस विद्याधर से कहा, विद्याधर! तुम विद्वान होते हुए भी मूर्ख क्यों बन रहे हो? तुम मेरे पिता तुल्य हो। तुम मेरे साथ विवाह कैसे करोगे। इस प्रकार कहने पर भी उसने मेरी बात हंसी में टाल दी और मुझे फिर वानरी बनाकर चला गया।

हे आर्य! आज बुध की रात हो गई है और वह नीच प्रातःकाल अवश्य ही आवेगा। यह मेरा कथा तो समाप्त हुई । अब आप अपना परिचय दें। हे साहसिक। आप कौन हैं? और यहां किस प्रकार आये हैं? कृपा कर आप मुझे इस दुष्ट के पंजे से छुड़ाकर मेरा उद्धार कीजियें।

यह सुन चन्द्रकला के पति श्रीचन्द्र ने अपने मन में विचार किया कि आज सुबह जो व्यक्ति मुझसे मारा गया है वह रत्न-चूड़ विद्याधर ही हो सकता है दूसरा नहीं। ऐसा विचार करके गर्व रहित हो कुमार ने अपना परिचय देना शुरू किया। कुमारी! मैं कुशस्थलपुर का निवासी हूँ, और निर्धनता बढ़ जाने के कारण धन कमाने के लिये विदेश में आया हूँ। रात बिताने के लिये मैं इस वट वृक्ष पर चढ़ा और ज्योही मैं डालपर बिछी हुई डाभ की पुआल पर सोने लगा तो मुझे एक खोखल दिखाई दी। उसमें

घुसकर मैं यहां आया हूँ। पाताल मन्दिर देखकर मैं इस पर चढ़ा और यहां इस दुमंजिले पर तुम्हें वानरी के रूप में देखा। मेरा तुमसे यही कहना है कि तुम बृथा दुःख क्यों झेल रही हो? तुम कुमारी तो हो ही। उस विद्याधर के साथ शादी करने पर विद्याधरी हो जाओगी। इसमें तो मुझे तुम्हारा भला ही दिखाई देता है अतः तुम यहीं रहो।

कुमार के वचनों का उत्तर देते हुए मदनसुन्दरी ने कहा हे आर्य! आप के स्वरूप को देखकर मैं आपको निर्धन नहीं मानती। मेरा अन्तःकरण आप के प्रति आकृष्ट हो रहा है। कहा हैः—

सतां हि सन्देह—पदेषु वस्तुषु,
प्रमाण मन्तः करण–प्रवृत्तयः।

अन्तःकरण ही सन्देहवाली वस्तुओं में प्रमाण भूल होता है। आप को पाकर मुझे विद्याधरत्व की कोई अभिलाषा नहीं है । मेरे भाग्य ने मुझे ही आप को यहां भेजा है। आप ही बत्तीस-लक्षण संपन्न मेरे स्वामी हैं। मैं ही नहीं शास्त्र भी आप के महान् बताते हैं। देखियें सामुद्रिक शास्त्र में बत्तीस-लक्षण जो आप में मौजूद हैं, उनका स्वरूप इस प्रकार बताया गया है।

भुजा, नेत्र, उंगलियां, जीभ और नासिका लम्बी होनी चाहिये। पीठ, कण्ठ, लिंग और जांघें छोटी होनी चाहिये। दांत, त्वचा, नाखून और केश सूक्ष्म होने चाहियें। हथेली पैरों के तलिये, तालु, आंखों के कोने, जीभ, नाखून और होठ ये लाल होने चाहियें। ललाट और वक्षस्थल विशाल, तथा नाभि और स्वर गंभीर होने चाहियें। आंखों के तारे और केश सचिक्कण श्याम होने चाहियें।

ये सारे सुलक्षण बत्तीसों ही आप के अंगों में प्रशस्य और प्रकट रूप से दीख रहे हैं। अतः मैं आप के ही श्रीचरणों की दासी बनूँगी। आप मेरा पाणि-ग्रहण कर, मेरे सुख दुःख के साथी और स्वामी बनें। अब मैं किसी की परवाह नहीं करती, केवल आप को ही अपने जीवन का आधार मानती हूँ। कृपा करके आप मुझे अपना लें बस मुझे विद्या या विद्याधर किसी की भी आवश्यकता नहीं है।

प्राणनाथ! पधारियें। इस समय आप अकेले हैं। प्रातःकाल होते ही वह दुष्ट विद्याधर आ धमकेगा। व्यर्थ में बाधा खड़ी कर देगा। इस लिये हम दोनों को यहां से चल देना चाहिये। जिसे कि वह हमें देख ही न पावे।

दूसरी बात पार्थना रूप में अर्ज करती हूँ कि आज ही दुपहर को लग्न का समय है। विवाह की सामग्री यहां मौजूद ही है। अतः आप किन्तु परन्तु न करते हुए विवाह कार्य को साध लें, तो बड़ा अच्छा हो। श्रेयांसि बहुविघ्नादि। हुआ करता है मंगल कार्य में बादा आही जाती है। हम तो बाधा के ठिकाने पर ही खड़े हैं अतः जल्दी विवाह करके हमें यहां से जल्दी प्रस्थान कर देना चाहिये।

मदनसुन्दरी को समझाते हुए कुमार ने कहा—सुन्दरी! तुम अपने मन से भय निकाल दो। तुम्हारा अब कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह तो बताओ यहां इरा धूमीधर में मध्याह्न का पता कैसे लगेगा? राजकुमारी ने बड़ी नम्रता से कहा—नाथ! इसी भवन के पास एक छोटी सी खिड़की है। उसी से दिन-रात और दोपहर का पता चलता है।

इसके बाद कुमार ने उसके साथ प्रातः काल होने पर वहीं पारणा किया। दोपहर के समय तक वे दोनों वहां उस विद्याधर की प्रतीक्षा करते रहे मगर लग्न के समय तक वह वहां न आया। पूर्व निश्चयानुसार उन दोनों ने उसी लग्न में अपना विवाह कर लिया इसके बाद वे दोनों उसी महल में विश्राम करने लगे। गोष्ठी के बीच में मदन सुन्दरी ने कुमार से पूछा, नाथ! मुझे इस बात का विचार होता है कि विवाह के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित वह विद्याधर अभी तक क्यों नहीं आया?

यह सुनकर कुमार ने राजकुमारी को उस विद्याधर के मृत्यु की सारी घटना से सूचित कर दिया वह बोला, सुन्दरी ! सुनो,

कुमंत्रैः पच्यते राजा, फलं कालेन पच्यते
लंघनैः पच्यते तापः, पापी पापेन पच्यते।।१।।

अर्थात् बुरी और अनिष्टकारी सलाह से राजा बर्बाद हो जाता है, फल समय पाकर ही फलते हैं। बुखार लंघन करने से ही उतरता है और पापी पुरुष अपने किये हुए पाप कर्मों के परिपाक होने पर अपने आप ही नष्ट हो जाते हैं।

सुन्दरी! आज तो हम यहीं ठहरेंगे परन्तु कल हम यहां से किसी दूसरे स्थान के लिये प्रस्थान करेंगे। इस प्रकार दोनों ने वह दिन और रात्रि बड़ी ही प्रसन्नता और प्रेमपूर्वक बिताई।

जैसे तैसे भी वह सुहाग-राग बड़ी ही बिलक्षण और प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा संभाषण से व्यतीत हुई। प्रातः काल होते ही वे दोनों उठकर अपने अपने आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर प्रस्थान की तैयारी करने लगे। वहां के सारे रत्न और सारभूत वे दोनों अंजन कुंपिकाएं उन्होंने अपने सथ ले लीं और उसी मार्ग द्वारा वापस बाहर निकल कर उसे एक विशाल शिला से ढ़क दिया। वहां पर कुछ धन बिखेर करके वे वहां से आगे चले।

हाथ में तलवार लिये हुए कुमार वन में शेर की तरह निश्शंक चला जा रहा था, और छाया की तरह सिंहनी मदनसुन्दरी उसका अनुगमन कर रही थी। क्रमशः वे उस भयानक वन को पार करके किसी एक गाँव में पहुँचे। विश्राम करने के विचार से वे विश्राम करने योग्य स्थान को ढूँढ़ते हुए एक सुन्दर तालाब-की तीर पर पहुँचे। वहाँ उद्यान में डेरा डाला गया। कुमार ने भोजन बनाने का सामान जुटा दिया और बात की बात में राजकुमारी ने घेवर और पुए बनाकर तैयार कर दिये।

इधर श्रीचन्द्र ने स्नानादि से निवृत्त हो आभूषण आदि पहन अपने पास रहे तीर्थंकर भगवान् के चित्र के सामने खड़े होकर देव-वंदन किया। उस समय मदन सुन्दरी ने कुमार की नाममुद्रा से उसका नाम मालूम कर लिया। उसने जो पहले चरणों भाटों और स्तुति पाठकों के मुँह से कुशस्थल के स्वामी महाराज प्रतापसिंह के पुत्र श्रीचन्द्र की प्रशंसा सुन रक्खी थी, उसी को अपना स्वामी बना देख उसके आनन्द की सीमा न रही। अपने स्वामी की उदारता, दयालुता और दक्षिणता देख उसका रोम रोम हर्षित हो उठा। उसने अपने स्वामी से विनय पूर्वक प्रार्थना की कि वे भोजन करने बैठ जायें।

श्रीचन्द्र ने उत्तर देते हुए कहा सुभ्रू! आज मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे अपनी धर्मपत्नी के हाथ का पकाया हुआ भोजन मिल रहा है। अतः मेरी इच्छा है कि किसी साधु महाराज को पहले भोजन करा कर फिर मैं भोजन करूँ, और अपने सौभाग्य में चार चाँद लगा दूँ। इतना कह कर कुमार तालाब क पाल पर चढ़कर इधर उधर देखने लगा। इतने में उसके भाग्य से खींचे हुए दो साधु वहाँ आते हुए दिखाई दिये। वह सामने जाकर उन्हें बड़े ही आदर पूर्वक ले आया और घेवर तथा पुए आदि पक्वान्न उन्हें बहरा दिया, फिर उसने अपनी स्त्री के और भी उपस्थित दूसरे लोगों के साथ भोजन किया।

भोजन आदि से निवृत्त होकर कुमार श्रीचन्द्र अपनी स्त्री के साथ उन साधुओं की सेवा में जा उपस्थित हुआ। वन्दन करके उन वत्स और कच्छ नाम के दोनों साधुओं के सामने वह बैठ गया। वत्स नामक साधु ने उन्हें धर्मोपदेश देना शुरू किया।

देवानुप्रियों! चित्त, वित्त और सुपात्रों का योग बड़ा ही दुर्लभ होता हैं। कहा भी है—

काले सुपत्त दाणं सम्मत्त-विसुद्ध बोहिलाभं च।
अन्ते समाहि-मरणं, अभव्य-जीवा न पावंति।।
उत्तम-पत्त साहु, मज्झिम-पत्तं च सावया भणिया।
अविरय सम्मद्दिट्ठी, जहन्न-पत्त मुणोयव्वं।।

अर्थात्—समय पर सुपात्र में दान देना, सम्यक्त्व से विशुद्ध ज्ञान-लाभ को प्राप्त करना और अन्त में समाधि-मरण ये तीन बातें अभव्य जीवों को प्राप्त नहीं होती। साधुओं को उत्तम-पात्र, श्रावकों को मध्यम पात्र और अवरित सम्यग्-दृष्टियों को जघन्य-पात्र शास्त्रों में बताये हैं।

दान धर्म से मनुष्य आत्म धर्म को पाता है, दान से ही त्याग की साधना होती है। इसीलिये कहा है कि—न्यायोपार्जित वित्त और त्याग-प्रधान चित्त की साधना से सुपात्र में दान देते रहना चाहिये। दान-धर्म से धर्म-लाभ के अधिकारी आत्मा इस लोक और परलोक की परम-लक्ष्मी को पाते हैं।

इस प्रकार श्रीवत्स महर्षि के सदुपदेश को सुनकर कुमार ने मुनिराज से प्रार्थना की कि—हे भगवन्! इस जंगल में घूमते हुए अनजान में मुझ-पापी से एक विद्याधर की हत्या हो गई है। अतः आप कृपा करके उस पाप का कोई प्रायश्चित दीजियें। मुझे मेरा पाप कांटे की तरह खटकता है।—

यह सुन श्रीमुनिराज ने फरमाया, पुण्यशाली! तुम्हारी पाप-भीरुता प्रशंसनीय है। यद्यपि तुम्हारे पाप की शुद्धि पश्चात्ताप और दान से हो चुकी है फिर भी इस प्रायश्चित के रूप में श्री अरिहंत, भगवान को नमस्कार उनका नाम जाप और मौका आने पर एक जिनमंदिर का भी निर्माण करना।

इस प्रकार सुधा-मधुर गुरु-वाणी को सुनकर आत्मा को कृत-कृत्य मानता हुआ कुमार बहुत प्रसन्न हुआ। क्रम से चलता हुआ वह श्री कल्याणपुर नाम के नगर में पहुँचा।

संसार एक रंग भूमि है। इस में भले बुरे कई प्रकार के पात्र होते हैं। भलों की भलाई सदा सुवर्णाक्षरों में लिखी जाती है, याद की जाती है और बुरों की बुराई घृणास्पद हो कर या तो लोग भूल जाते हैं या फिर उस के प्रति तिरस्कार ही तिरस्कार होता रहता है। कौन नहीं जानता परोपकारी विक्रमादित्य को वस्तुपाल-तेजपाल को या पौराणिक राजा श्रीपाल को। उसी तरह से उस दुर्जन वृत्ति वाले धूर्त धवल सेठ को भी हम भूले तो नहीं पर उसके प्रति हमारा कोई सद्भाव नहीं है।

हमारा चरित्र नायक कुमार श्रीचन्द्र एक भला पात्र है। उसमें वीरता धीरता और गंभीरता तो है ही पर साथ ही साथ उदारता और दक्षिणता भी चरमसीमा में पहुंच रही थी। अपने पूर्व-पुण्य-कर्मों की प्रधानता से उसके विरोधी उसका कुछ न बिगाड़ सकते थे बल्कि वे बिगाड़ने की भावना वाले ही बिगड़ जाया करते थे।

कल्याणपुर की ही बात है। कुमार मदन-सुंदरी को लिये एक दिव्य-देव मंदिर में विश्राम कर रहा था। भोजन की तैयारी थी। इतने में एक कापालिक-बाबा श्रीचन्द्र कुमार के पास आया। कुमार को बत्तीस-लक्षण संपन्न देखकर मन ही मन मुदित होता हुआ कुमार से कहने लगा—

विरला जाणंति गुणा, विरला जाणंति अत्तणो दोसे।
विरला परकज्जपरा, पर दुक्खे दुक्खिया विरला।।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho-Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653
Fax : 2271-2151,

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/S. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003, Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" — 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 — 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN — 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

—आत्मा की स्वतन्त्रता—

हमारी आत्मा के अतिरिक्त हमें विश्व में कोई दूसरी शक्ति सुख-दु:ख देने के लिये समर्थ नहीं। एक चींटी जैसे क्षुद्र जीव से लेकर चक्रवर्ती राजा व इन्द्र आदि तक को जो सुख या दु:ख होता है वह उनके अपने योग्य या अयोग्य कर्तव्य का ही फल है। उनका कर्म ही सुख दु:ख का कारण है।

कर्म के नियम अटल है। हो सकता है कि मनुष्य, राज्य व समाज के बांधे हुए नियमों को तोड़ दे और उसमें ठहराये हुए दण्ड से छूट जाय परन्तु कर्मों के नियमों को कोई नहीं तोड़ सकता। यह हो सकता है कि उन नियमों का अनादर करे परन्तु उसके दण्ड से नहीं छूट सकता।

जौ बोने से जौ, गेहूँ बोने से गेहूँ और पुष्पों से पुष्प मिलेंगे जो बोवोगे वही मिलेगा, यह प्रकृति कहती है परन्तु तुम क़्या बोओ? यह आज्ञा प्रकृति नहीं देती। तुमको जो पसन्द हो बोओ, परन्तु बोने के पश्चात् उसके बदले दूसरे फल की आशा न रखो। क़्या करना चाहिये इसकी स्वतन्त्रता प्रकृति ने तुम्हें दी है परन्तु इससे होने वाले फल से तुम नहीं बच सकते। यह कर्मों का महा नियम है। तुम एक स्वतन्त्र जीव हो। तुम में पुरुषार्थ करने की शक्ति हो। अतः प्रार्थना करके एक के बदले दूसरा फल मांगने की मूर्खता और याचना की प्रवृत्ति को बन्द करदो।

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

SSRM/KOL/RMS/WBRNP-070/2004-06
VoL. XXVII. NO. 10. TITTHAYARA January 2004
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666 7212/7225